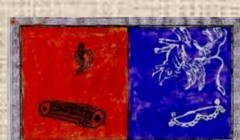
ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३१८ म अंक १५ सितम्बर २०२३ (वर्ष १६ मास १८९ अंक ३१८)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर



 भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*
ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।
(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ ओकर वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रायल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रायल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

Videha e-Journal: Issue No. 378 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनूमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्त्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मोन आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ उड़ेयन (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ई त्रिभुवनरूपी उत्तम खेतक कीर्तिरूपी लती कोना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। हम सभ गोटकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (मोन सभकेँ)। मुदा ई वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करैत छल, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तँ एहन विरुद्ध देल उक्तिक निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः

: :

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.२.आचार्य रामानंद मंडल-शिक्षक दिवस आ वर्तमान विद्यालय निरीक्षण आदेश

२.३.लालदेव कामत-रिनियाँक चरित्र चित्रण करैत एक पाथी/ हमर आदर्श स्मृति शेष सूर्य नारायण चौधरी/ सर्वश्री रासविहारी दासजी: एक विषय किर्छन स्मरण/ स्व. हरिनंदन कामत जीक गाम मंगरौनी/ सब करैत छैक प्रणाम्

२.४.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२१)

२.५.नन्द विलास राय-घसवहिनी

२.६.प्रमोद झा 'गोकुल'- हमर कि डाकर? (वीहनि कथा)

२.७.नवीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सबकिछु (उपन्यास)-धारावाहिक

२.८.किशन कारीगर- बूढ़कानी दादीए चुन गै हमरा पाछूए घुन? (हास्य कटाक्ष)

२.९.अरविन्द ठाकुर- मंसटिया बद्धू (लघुकथा)

३.𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒐𑒝𑓂𑒛

३.𑓑.𑒣𑒫𑒢 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒑𑒼𑒢𑒾𑒪𑒲'-𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒂 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣

३.२.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱

३.३.𑒂𑒬𑒲𑒭 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩- २ 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪

३.४.𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪- 𑒩𑒴𑒧 𑒅𑒠𑒰𑒢𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒢/ 𑒢𑒠𑒲/ 𑒖𑒧𑒲𑒢



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्ति र्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

𑓇 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 Ẇ 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑓁 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒰𑒣: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒼𑒭𑒡𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒰: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹, 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒩, 𑒖𑒪𑒧𑒹, 𑒎𑒭𑒡𑒧𑒹, 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒧𑒹, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒧𑒹, 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒑𑒝𑒧𑒹 𑒂 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒯𑒳𑒁𑒨।

𑓇-𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒠𑓂𑒨𑒾-𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨-𑒞𑒩𑒹𑒑𑒝, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭- 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒠𑓂𑒨𑒴𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒂𑒣:-𑒖𑒪, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹𑒠𑒹𑒫𑒰- 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰, 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧- 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒏।

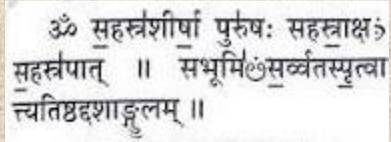
ॐ, स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।

𑓇, 𑒮↓𑒯𑒮𑓂𑒩↑𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒰↓ 𑒣𑒳𑒩𑒳↑𑒭𑓁। 𑒮↓𑒯↓𑒮𑓂𑒩𑒰↓𑒏𑓂𑒭𑓁 𑒮↓𑒯𑒮𑓂𑒩↑𑒣𑒰𑒞𑓂।

स भूमिँ॑ ग्वंग वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वा। अत्य॑तिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

𑒮 𑒦𑒴𑒧𑒱𑒿↑ Ẇ 𑒫𑒱↓𑒬𑓂𑒫𑒞𑒼↑ 𑒫𑒵↓𑒞𑓂𑒫𑒰। 𑒁𑒞𑓂𑒨↑𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒠𑓂 𑒠𑒬𑒰𑒓𑓂𑒑𑒳↓𑒪𑒧𑓂॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।


ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः
स॒हस्र॑पात् ॥ सभूमिं॑स॒र्व्वत॑स्पृ॒त्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रांँत्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

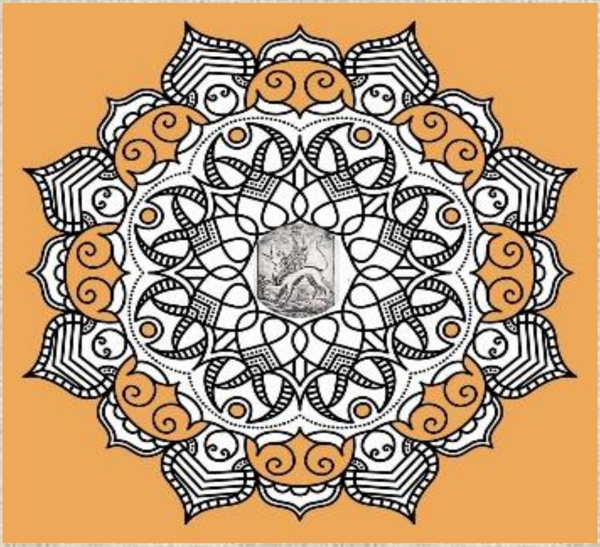
卐 (Swastik)

𑒀 (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७७ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र

गुणाढ्यक पैशाची भाषाक बृहत् कथाक क्षेमेन्द्रक कथा मंजरी वा सामदेवक कथासरित्सागरक अनुवाद होएबाक कथा कथा कहबाक शैली सेहो रहS सकैए मुदा ई अनुवादक कथाक प्रारम्भ तँ करिते अछि।
अनुवादक इतिहास बड्ड पुरान छै। जेना प्राचीन भाषा जेना संस्कृत, अवेस्ता, ग्रीक आ लैटिनक जेना कालजयी कृति जखन दुरूह होबS लागल तँ अध्ययन चाहे तँ भाष्य लिखबाक खगताक अनुभव भेल आ तकर बाद आगाँ जेकरा आसन्न भाषामे अनुवाद कS बुझबाक खगताक अनुभव भेल। प्राचीन मौर्य साम्राज्यक सम्राट अशोकक राजनयन कीलित शिलालेख सभ, कएकटा लिपि आ भाषामे, ताहिक आदेशकेँ विभिन्न प्रान्तमे प्रसारित करलक। भाष्य यद्दपि मूल भाषामे लिखल जाइत छल आ बादमे आसन्न भाषामे लिखल जाए लागल।

मैथिलीसँ आसन्न भाषा आ आसन्न भाषासँ मैथिलीमे अनुवाद लेल सिद्धान्त: मैथिलीसँ आन आसन्न भाषामे अनुवाद अखन धरि संस्कृत, बांग्ला, नेपाली, हिन्दी आ अंग्रेजी धरि सीमित अछि। तहिना ई

पाँचो भाषाक सभ अनुवाद मैथिलीमे भेल अछि। ई पाँच भाषाक अतिरिक्त मराठी, मलयालम आदि भाषासँ सेहो सभ मैथिली अनुवाद भेल अछि मुदा से नगण्य अछि। मैथिलीमे अनुवाद आ मैथिलीसँ अन्य भाषामे अनुवाद ई पाँचो भाषाकेँ मध्यस्थ भाषाक रूपमे लऽ कऽ भेल अछि। अइ पाँच भाषामे हिन्दी, नेपाली आ अंग्रेजीक अतिरिक्त आन दू भाषाक मध्यस्थ भाषाक रूपमे प्रयोग सीमित अछि। अनुवादसँ कने भिन्न अछि रूपान्तरण, जेना कथाक नाट्य रूपान्तरण वा गद्यक पद्यमे पद्यक गद्यमे रूपान्तरण। ई सभ मैथिलीसँ मैथिलीमे विधाक रूपान्तरण भेल अछि आ अनुवाद सिद्धान्तक स्थान नै लेलक रूपान्तरकार अर्थ आ भावक अनर्थ कऽ देने अछि। मैथिलीमे आ मैथिलीसँ अनुवादमे तँ ढेरी समस्या आन निकट अछि।

उत्तम अनुवाद लेल किछु आवश्यक तत्व: शब्दश: अनुवाद करबा काल ध्यान राखू जे करी आ सन्दर्भक मूल भाव आबि रहल अछि आकि नै। शब्द, वाक्य आ भाषाक गठनि अनुरूप रहए से ध्यानमे राखू। मूल भाषाक शब्द सरल छै प्राचीन अछि तँ अनूदित भाषाक शब्द सरलकेँ सेहो पुरान आ खाँटी राखू। मूल आ अनूदित भाषाक व्याकरण आ शब्द भण्डारक वृहत् स्थान तेँ आवश्यक भऽ जाइत अछि। मूल भाषामे मुँह कोचिया कऽ बाजल रामनाथ, उमेशक प्रति सम्बोधनकेँ रामनाथो, उमेशोक बदलामे रामनाथजी, उमेशजी कऽ अनुवाद कएल जाएब उचित होएत मुदा सामान्य परिस्थितिमे से उचित नै होएत। से शब्द, भाव, व्याकरण सेहो आ मूल कृतिक देश-कालक भाषामे सेहो समानता चाही। अनुवादककेँ मूल आ अनूदित

कएल जाएबला भाषाक स्थान तँ होबाक चाही संगहि दुनू भाषा ऊपर इतिहास, भूगोल, लोककथा, कहबी आ पथ्य-तथ्य आ नगरक संस्कृतिक ज्ञान सेहो होबाक चाही। ई मध्यस्थ भाषासँ अनुवाद करबा काल आर बेसी महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। ऐ परिस्थितिमे “दुनू भाषा ऊपरक इतिहास, भूगोल, लोककथा, कहबी आ पथ्य-तथ्य आ नगरक संस्कृतिक ज्ञान” सँ तात्पर्य अनूदित आ मूल भाषा ऊपरसँ हएत मध्यस्थ भाषा ऊपरसँ नै। कखनो काल मूल भाषाक कोनो भाषासँ सम्बन्धित तत्व वा शब्द भाषिक तत्व (सांस्कृतिक तत्व) क सही-सही उदाहरण अनूदित भाषामे नै भेटैत अछि आ तखन अनुवादक गप्पकेँ बनाबऽ लगैत छथि वा ओइठाम लेल ओकरा सन्निकट शब्दावली (ओइठाम नै भेटल तत्वक) दमए लगैत छथि। ऐ परिस्थितिमे सन्निकट शब्दावली देबासँ नीक गप्पकेँ बनबा कऽ बुझाएब वा परिशिष्ट दऽ ओकरा स्पष्ट करब हएत। ऐ सँ मूल भाषासँ मध्यस्थ भाषाक माध्यमसँ कएल अनुवादमे होइबला साहित्यिक घाटाकेँ न्यून कएल जा सकत।

कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध), निबन्ध, स्कूल-कॉलेजक पुस्तक, संगणक विज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञानक पोथीक अनुवाद करबा काल किछु विशेष तकनीकक आवश्यकता पड़त। निबन्ध, स्कूल-कॉलेजक पुस्तक, संगणक विज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञानक अनुवाद ऐ अर्थेँ सरल अछि जे ऐ सभमे विस्थानसँ विषयक चर्चा होइत अछि आ सर्जनात्मक साहित्य {कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध)} क विपरीत भाव आ संस्कृतिक गुणांक नै रहैत अछि वा

कम नहि अछि। संगे ओतए पाठक सेहो कथा/ विषयकेँ अनुसार सजाओल नहि छथि। केमिकल नाम, बायोलोजिकल आ बाटनिकल बाइनरी नाम आ आन सभ सिम्बल आदि जे विशिष्ट अन्तर्राष्ट्रीय संस्था सभ द्वारा स्वीकृत अछि तकर परिवर्तन वा अनुवाद अपेक्षित नै अछि। सर्जनात्मक साहित्यमे नाटक सभसँ कठिन अछि, तेँ कविता अछि आ तखन कथा, जेँ अनुवादकक दृष्टिकोणसँ देखी तखन। नाटकमे नाटकक पृष्ठभूमि आ पात्रक निर्देशार्थकेँ चिह्नित करैत पड़त संगहि पात्र सभक मनोविज्ञान बुझए पड़त। कवितामे कविताक विधासँ ओकर गठनिसँ अनुवादकक परिचित होएब आवश्यक, जेना हाइकूक मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवाद करै बेरमे मैथिलीक वार्णिक ५/७/५ क मोल जेँ अंग्रेजीक अक्षरावटसँ करबै तँ अहाँक अनुदित हाइकू हास्यास्पद भऽ जाएत कारण अंग्रेजीमे ५/७/५ सिलेबलक हाइकू होइ छै आ मैथिलीमे जेना वर्ण आ सिलेबलक समानता होइ छै से अंग्रेजीमे नै होइ छै। ई सन्दर्भमे श्याम सुन्दर चौधरीक मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवाद एकटा प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि। कविताक लय, बिम्बयन विधान करैत पड़त संगहि कविता खण्डक कविताक मुख्य शैलीसँ मिलान करैत पड़त। कथामे कथानक आ कथाक पात्रक संग कथाक क्रम, वैकल्पिक समय-कालक स्थान आ वातावरणक स्थान आवश्यक भऽ जाइत अछि। आब महाकाव्यक अनुवाद देखू, रामलोचन शरणक मैथिली रामचरित मानस अवधीसँ मैथिलीमे अनुवाद अछि मुदा दोहा, चौपाइ, सोरठा सभ शास्त्रीय रूपेँ अनुदित भेल अछि।
संस्कृत भाषाक अनुवादक माध्यमसँ पाठक आंग्ल शासक लोकनि द्वारा

प्रारम्भ भेल। ओ विधिसँ न लैटिनक आ नहिये ग्रीकक अध्ययन कराओल गेल छल। ओ विधिसँ जँ अहाँ संस्कृत वा कोनो भाषा सीखब तँ आचार्य आ कोविद कऽ जाएब मुदा सम्भाषण नै कएल हएत। जँ कोनो भाषाकेँ अहाँ मातृभाषा रूपेँ सीखब तखन सम्भाषण कऽ सकब, संस्कृति आदिक परिचय पाठ्यक्रममे शब्दकोष; आ लोककथा आ इतिहास/ भूगोलक समावेश कऽ कएल जा सकैत अछि।
संगणक द्वारा अनुवाद: सर्जनात्मक वा निबन्ध, स्कूल-कॉलेजक पुस्तक, संगणक विज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञानक अनुवाद संगणक द्वारा प्रायोगिक रूपमे कएल जाइत अछि मुदा “काल्ड ब्लडड एनीमल” क अनुवाद हास्यास्पद रूपेँ “नृशंस जीव” कएल जाइत अछि। मुदा संगणकक द्वारा अनुवाद किछु उत्तम सहल रूपेँ भेल अछि, जेना विकीपीडियामे ७०० शब्दक एकटा “बेसी प्रयुक्त शब्दावली” आ २६०० शब्दक “शब्दावली”क अनुवाद केलासँ, गूगलक ट्रान्सलेशन अडआन आदिमे आधारभूत शब्दक अनुवाद केलासँ आ आन गवेषक जेना मोजिला फायरफॉक्स आदिमे अंग्रेजीक सङ यान्त्रिक संगणकीय शब्दक अनुवाद केलासँ त्रुटिविहीन स्वतः मैथिली अनुवाद भऽ जाइत अछि।

१.२.अंक ३११ पर टिप्पणी

गौतमा नंद झा

हमरा विदेहक माध्यम स जीवैत लोकक विशेषांक निकालब बड नीक लगैत अछि, आ संगहि एकर अपन नियम आ सिद्धांत पर ठाढ़

रहब एकटा सबसँ हुनाक करैत अछि। हमरा बूझाएल जे विदेह एखनधरि कोनो गोलैसी आ राजनीति क शिकार नहिं रहल अछि, हमरा एहि समूहक समक्ष व्यक्तित्व पर गर्व होइत अछि।

२.गद्य खण्ड

२.१.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.२.आचार्य रामानंद मंडल-शिक्षक दिवस आ वर्तमान विद्यालय निरीक्षण आदेश

२.३.लालदेव कामत-निनियाँक चरित्र चित्रण करैत एक पोथी/ हमर आदर्श स्मृति शेष सूर्य नारायण चौधरी/ सर्वश्री रासबिहारी दासजी: एक विषय किर्त्तन स्नाता/ स्व. हरिनंदन कामत जीक गाम मंगरौनी/ सब करैत छैक प्रणाम्

२.४.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२१)

२.५.नन्द विलास राय-घसवाहिनी

२.६.प्रमोद झा 'गोकुल'- हमर कि ऽकर? (बीहनि कथा)

२.७.रवीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि सबकिछु (उपन्यास)-धारावाहिक

२.८.किशन कारीगर- बूझक्की दावीए चुर गैं हमरा पाछूए घुर? (हास्य कटाक्ष)

२.९.अरविन्द ठाकुर- संसरिया बद्द (लघुकथा)

२.१.यनमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

यनमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)



(नाम - परमानन्द लाल कर्ण (1930) पिता - स्व० परशुराम लाल कर्ण, गाँव - घोघेसर, पो० बिरौल, जिला - दरभंगा शिक्षा - स्नातकोत्तर, CAIIB, सेवानिवृत्त - प्रबन्धक सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया)

गीता माहात्म्य
(पद्म पुराण उत्तर खण्ड)
चौदहम अध्याय

महेश्वर कहलनि - पार्वती ! आब हम भवबन्धन सँ छुटकारा पाबइ केँ साधनस्वरूप चौदहम अध्यायक माहात्म्य बतबैत छी अहाँ ध्यान दइ केँ सुनू। सिंहल द्वीप मे विक्रमबेताल नाम सँ एकटा राजा छलथि, जे सिंह सन पराक्रमी आ कलाक भंडार छलाह। एक दिन ओ शिकार खेलक लेल उत्सुक भइ राजकुमार सङ्ग दूटा कुतियाक संग वन मे गेलाह। ओहि ठाम पहुँचला पर तेजगति सँ भागैत खरगोशक पाछू अपन कुतिया छोड़ि देलथिन। तखन सब लोकनि केँ देखैत-देखैत खरगोश एना भागइ लागल मानू कतहुँ उड़ि गेल होय। दौड़ैत-दौड़ैत थकि गेलाक कारण ओ एकटा पैघ खंदक मे गिर पड़ल। गिरलाक बादहुँ ओ कुतियाक हाथ नहि आयल आ ओहि स्थान पर पहुँचि गेल जाहि ठामक वातावरण शान्त छल। ओहि ठाम हरीन निर्भय भइ सब दिश गाछक छाहरि मे बैसल रहैत छल। बानर सेहो अपने आप टूटि केँ गिरल नारियलक फर आ पाकल आम सँ पूर्ण तृप्त रहैत छल। ओहि ठाम सिंह आ हाथीक बच्चा सब संगे खेलैत छल आ साँप सेहो निडर भइ मोरक पाँखि मे घुसि जायत छल। ओहि ठाम एकटा आश्रम मे वत्स नाम सँ एकटा मुनि रहैत छलाह जे जितेन्द्रिय आओर शान्त भाव सँ गीताक चौदहम अध्यायक पाठ करैत छलाह। आश्रम लग वत्स मुनिक कोनो

𑒬𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒰𑒞𑒩 𑒡𑒼𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒖𑒪 𑒮𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧𑒏 𑒧𑒰𑒙𑒱 𑒑𑒲𑒪 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒐𑒩𑒑𑒼𑒬𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒬𑒹𑒭 𑒕𑒪। 𑒍 𑒯𑒰𑒿𑒤𑒻𑒞 𑒍𑒯𑒱 𑒏𑒲𑒔𑒛𑓃 𑒧𑒹 𑒑𑒱𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓂𑒣𑒩𑓂𑒬 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒐𑒩𑒑𑒼𑒬 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒮𑒰𑒑𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒰𑒩 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒠𑒱𑒫𑓂𑒨 𑒫𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒪𑒼𑒏 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒪𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒲𑒕𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒂𑒨𑒪। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒣𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒠𑒼𑒏 𑒕𑒲𑓀𑒙 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒦𑒴𑒐 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒣𑒲𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒿 𑒩𑒯𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒍 𑒪𑒞𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒱 𑒠𑒱𑒫𑓂𑒨𑒰𑓀𑒑𑒢𑒰𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒑𑒢𑓂𑒡𑒩𑓂𑒫 𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒬𑒼𑒦𑒱𑒞 𑒠𑒱𑒫𑓂𑒨 𑒫𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒍 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒪𑒼𑒏 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒄 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒧𑒹𑒡𑒰𑒫𑒲 𑒬𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒮𑒳𑒏𑒢𑓂𑒡𑒩 𑒯𑒿𑒮𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑓂𑒧𑒏 𑒫𑒻𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒮𑒼𑒔𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒥𑒛𑓃 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒧𑒨 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒞𑒐𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨 𑒮𑒿 𑒔𑒏𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒍 𑒥𑒛𑓃 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑓄 𑒣𑒴𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒫𑒱𑒣𑓂𑒩𑒫𑒩! 𑒄 𑒢𑒲𑒔 𑒨𑒼𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒠𑒳𑒢𑓂𑒢𑒴 𑒖𑒲𑒫 𑒪𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒂 𑒐𑒩𑒑𑒼𑒬 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒯𑒲𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒪𑒼𑒏 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱? 𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒰𑒅।

𑒬𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒦𑒴𑒣𑒰𑒪! 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒫𑒮𑒹 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒍 𑒖𑒱𑒞𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒾𑒠𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒖𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒬𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒕𑒲। 𑒯𑒧 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒖𑓂𑒘𑒞𑒰 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒲। 𑒑𑒳𑒩𑒳𑒖𑒲𑒏 𑒦𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒯𑒧 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒢 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒾𑒠𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒖𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑒰𑒞𑒩𑒏 𑒡𑒳𑒁𑒢 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒪𑒹𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒄 𑒐𑒩𑒑𑒼𑒬 𑒂 𑒪𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒪𑒼𑒏 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒂𑒥 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒿𑒮𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒥𑒞𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒳𑒠𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒢𑒑𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒹𑒬𑒫 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒣𑒙𑒲 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒁𑒑𑓂𑒩 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒫𑒱𑒪𑒼𑒦𑒢𑒰 𑒕𑒪। 𑒍 𑒮𑓂𑒫𑒔𑓂𑒕𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒩𑓄 𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒕𑒪𑒲𑒯 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡 𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒦𑒩𑒱𑒏 𑒫𑒻𑒩𑒏 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒏𑓄 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒡 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒣 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒐𑒩𑒑𑒼𑒬 𑒨𑒼𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒰𑒣𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒪𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒲𑒯।

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒄 𑒮𑒥 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒬𑓂𑒩𑒠𑓂𑒡𑒰𑒪𑒳 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒾𑒠𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒲𑒢 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒩𑒧 𑒑𑒞𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱।

——0——



(𑒢𑒰𑒧- 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝 (𑓑𑓙30) 𑒣𑒱𑒞𑒰- 𑒮𑓂𑒫० 𑒣𑒩𑒬𑒳𑒩𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒑𑒰𑒿𑒫- 𑒒𑒼𑒒𑒹𑒮𑒩, 𑒣𑒼०- 𑒥𑒱𑒩𑒾𑒪, 𑒖𑒱𑒪𑒰- 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰- 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒞𑒏𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩, CAIIB, 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞- 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏 𑒮𑒹𑒢𑓂𑒙𑓂𑒩𑒪 𑒥𑒻𑓀𑒏 𑒁𑒿𑒤 𑒃𑓀𑒛𑒱𑒨𑒰)

𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨
(𑒣𑒠𑓂𑒧 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒐𑒝𑓂𑒛)
𑒣𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲! 𑒂𑒥 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒮𑒳𑒢𑒴। 𑒑𑒾𑒛𑓃𑒠𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒏𑒵𑒣𑒰𑒝 𑒢𑒩𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒞𑒪𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒡𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒨𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒩𑒰𑒮𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒹𑒢𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒬𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒂𑒍𑒩 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒏𑒪𑒰𑒏 𑒦𑒝𑓂𑒛𑒰𑒩 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒩𑒦-𑒦𑒹𑒩𑒳𑒝𑓂𑒛 𑒕𑒪। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒦𑒳𑒖𑒰 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒝𑓂𑒛 𑒥𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒋𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒍 𑒣𑒰𑒣𑒲 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒯𑒱𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒫𑒡 𑒏𑓄 𑒏𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒰𑒠 𑒍 𑒯𑒻𑒖𑒰𑒏 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒦𑓄 𑒧𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒧𑒹 𑒍 𑒣𑒰𑒣𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒮𑒱𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒠𑒹𑒬 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒞𑒹𑒖𑒮𑓂𑒫𑒲 𑒒𑒼𑒛𑓃𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒍𑒏𑒩 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒮𑒩𑓂𑒙𑒢 𑒕𑒪। 𑒒𑒼𑒛𑓃𑒰𑒏 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒞𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒻𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒜𑒹𑒩 𑒧𑒼𑒪 𑒠𑓄 𑒏𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒐𑒩𑒲𑒠 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒥𑒛𑓃 𑒖𑒞𑒢 𑒮𑒿 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒡𑒰𑒢𑒲 𑒪𑓄 𑒋𑒪𑒰𑒯। 𑒫𑒻𑒬𑓂𑒨𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒍 𑒒𑒼𑒛𑓃𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒱𑒁 𑒋𑒪𑒰𑒯। 𑒨𑒠𑓂𑒨𑒣𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒱𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒞𑒟𑒰𑒣𑒱 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒣𑒰𑒪 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒂𑒑𑒧𑒢𑒏 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒢𑒱- 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒱𑒋 𑒂𑒨𑒪 𑒕𑒲। 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒧𑒹 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒠𑒹𑒫! 𑒮𑒱𑒢𑓂𑒡𑒳𑒠𑒹𑒬 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒁𑒬𑓂𑒫 𑒕𑒪 𑒖𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒮𑒧𑒗𑒱 𑒯𑒧 𑒜𑒹𑒩 𑒠𑒰𑒧 𑒠𑓄 𑒏𑒿 𑒐𑒩𑒲𑒠 𑒪𑒹𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒍𑒯𑒱 𑒁𑒬𑓂𑒫 𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒪𑓄 𑒂𑒅।

वासुर मे ओ अश्व गण मे उच्चैश्रवा सन छल। ओकर रूप मानू सुन्दरक घर होय। श्वेत नक्षत्रक सागर झूलि पड़ैत छल। वैश्य घोड़ा लऽ एलाह आ राजा ओकरा देखलथिन। अश्वक लक्षणक ज्ञाता अमात्य लोकनि ओकर बड़ प्रशंसा केलथिन। ई सुनि राजा अपार आनन्द मे निमग्न भऽ गेलाह आ ओ वैश्य केँ मुँहमाँगा सोना दऽ अश्व खरीद लेलनि। किछु दिनक बाद एक समय राजा शिकार खेलक लेल उद्यत भऽ ओहि अश्व पर सवार भऽ वन मे गेलाह। ओहि ठाम मृगक पाछू ओ अपना घोड़ा केँ दौड़ा देलथि। पाछू-पाछू सब दिशा सँ दौड़ैत सब सैनिकक साथ छूटि गेल। ओ हरिण सँ आकृष्ट भऽ दूर निकलि गेल छलाह। प्यास हुनका व्याकुल कऽ देल-कनि। तखन ओ घोड़ा पर सँ उतरि पानिक खोज करऽ लगलाह। घोड़ा केँ ओ गाछक डारि मे बाँधि देलथिन आ अपने एकटा चट्टान पर चढ़ऽ लगलाह। किछु दूर गेला पर ओ देखलथि जे एकटा पातक टुकड़ा हवा सँ उड़ि केँ शिलाखण्ड पर गिरल छल। ताहि मे गीताक पन्द्रहम अध्यायक आधा श्लोक लिखल छल। राजा ओकरा पढ़ऽ लगलाह। हुनका मुख सँ गीताक श्लोक सुनि घोड़ा तुरंत गिर पड़ल आ अश्व योनि सँ मुक्त भऽ दिव्य विमान पर बैसि स्वर्गलोक चलि गेलाह। तत्पश्चात राजा पहाड़ पर चढ़ि एकटा उत्तम आश्रम देखलथिन जाहि ठाम नागकेसर, केरा, आम आ नारियलक गाछ लहलहाइत छल। आश्रम मे एकटा ब्राह्मण बैसल छलाह जे संसारक वासनाक सँ मुक्त छलाह। राजा हुनका प्रणाम कऽ बड़ भक्ति सँ पूछलथि- यौ ब्राह्मण, हमर अश्व जे अखन-अखन स्वर्ग चलि गेल अछि तकर कोन कारण अछि।

राजाक बात सुनि त्रिकालदर्शी, मन्त्रवेत्ता आ महापुरुष लोकनि मे श्रेष्ठ विष्णुशर्मा नाम सँ ब्राह्मण कहलनि- राजन! पूर्व काल मे अहाँ नगर मे 'सरभ मेरुण्ड' नाम सँ सेनापति छल, ओ अहाँक पुत्र सहित मारि केँ अहाँक राज्य हड़पऽ केँ लेल तैयार छल ओहि बीच हैजाक शिकार भऽ ओ मरि गेलाह। तकर बाद ओहि पाप सँ ओ घोड़ा योनि मे जन्म लेलनि। एहि ठाम गीताक पंद्रहम अध्यायक आधा श्लोक लिखल भेटि गेल तकरा अहाँ पढ़ऽ लगलहुँ। अहाँक मुख सँ सुनि ओ अश्व केँ स्वर्ग भेटि गेलनि।

तदनन्तर राजाक सैनिक जनका ढूँढ़ैत ओहि ठाम आबि गेलाह। जनका सबकेँ साथ प्रणाम कऽ राजा ओहि ठाम सँ प्रसन्नतापूर्वक चललाह आ गीताक पन्द्रहम अध्यायक श्लोकाक्षर सँ अंकित ओहि पत्र केँ बाँचि-बाँचि खुश भेलाह। जनकर आँखि हर्ष सँ भिल छल। घर आबि ओ मनुरेखा मन्त्री संग अपना पुत्र सिंहरथ केँ राज्यसिंहासन पर अभिसिक्त कऽ अपने पन्द्रहम अध्यायक जप सँ विशुद्ध चित्त भऽ मोक्ष प्राप्ति केलनि।

२.२.आचार्य रामानंद मंडल-शिक्षक दिवस आ वर्तमान विद्यालय निरीक्षण आदेश



आचार्य रामानंद मंडल-शिक्षक दिवस आ वर्तमान विद्यालय निरीक्षण आदेश

शिक्षक दिवस आ वर्तमान विद्यालय निरीक्षण आदेश

बंदउ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

-संत तुलसीदास

गुरु के महिमा के बखान कबीर के शब्द में -

सात समद के मसि करौं,लखन सब बनराइ।

धरती सब कागज करौं, गुरु गुन लिखा न जाइ।।

गुरु गोविंद दोनों खड़े, काके लागूं पाय।

बलिहारी गुरु आपने,गोविंद दिया बताय।।

मान कि गुरु क महिमा अपरम्पार हय।

गुरु पूर्णिमा महर्षि कृष्ण द्वैपायन अर्थात वेद व्यास क सम्मान मं मनायल जाइत हय वो वेद क चार भाग मं बंटलन यथा ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद आ अथर्ववेद। अठारह पुराणों क संग वो चर्चित महाभारत काव्य ग्रंथ क रचयिता हतन।

गुरु क महत्ता बनल रहय गेला आजादी क बाद पूर्व राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन क जयंती पांच सितम्बर क शिक्षक दिवस क रूप मं मनायल जाइत हय। आ शिक्षक क गुरु रूप म श्रद्धा निवेदित कैल जाय हय।

प्रारम्भिक शिक्षा क अंतर्गत महीना म एक दिन प्रखंड स्तरीय गुरु गोष्ठी क आयोजन कैल जाइ हय। जेमे हर विद्यालय क प्रधानाध्यापक अपन विद्यालय क आवश्यक कागजात क जमा करैत हतन तथा सरकारी आदेश-निर्देश स अवगत होइ हतन। गुरु गोष्ठी क अध्यक्षता प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी करैत हतन। प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी प्रखंड स्तरीय निरीक्षक पदाधिकारीयो छतन। हालांकि बिहार शिक्षा परियोजना क गठन क पहिले मध्य विद्यालय क निरीक्षी पदाधिकारी उप शिक्षा पदाधिकारी आ प्राथमिक विद्यालय क निरीक्षी पदाधिकारी प्रखंड विकास पदाधिकारी होइत रहलन। जिला स्तर पर जिला शिक्षा अधीक्षक आ जिला शिक्षा पदाधिकारी निरीक्षी पदाधिकारी होइत रहलन। प्रारम्भिक शिक्षा क प्रशासनिक काज जिला शिक्षा अधीक्षक आ माध्यमिक शिक्षा क जिला शिक्षा पदाधिकारी करैत रहलन। हालांकि जिला शिक्षा उपाधीक्षक

आ अनुमंतल शिऊा यदाधिकानीया हाथ्थग नहलन यनंव वा निष्क्रिय नहैग नहलन।

आवि जिला शिऊा अधीऊक, उयाधीऊक अनुमंतल शिऊा यदाधिकानी आ ऊत्र शिऊा यदाधिकानी क यद समाप्त क दल (गेल हया आ आवि जिला शिऊा यदाधिकानी,चान (गा जिला कार्यक्रम यदाधिकानी, कार्यक्रम यदाधिकानी, सहायक कार्यक्रम यदाधिकानी काज क नहल हगन। सरु निनीऊी यदाधिकानी हाथ्थग हगन।

एवव न, वल्कि विद्यालय शिऊा समिति क अध्यऊ (यंवायग वार्ते सदस्य), मूखिया, प्रखंत प्रमूख आ जिला यनिषद क अध्यऊ प्रार्नाम्भक विद्यालय क निनीऊी यदाधिकानी हगन। प्रानम्भिक शिऊा स लक उद्वगन माध्यमिक शिऊा गक त्रिस्तनीय यंवायगी नाज क अधीन हया। ओकरा गक कि शिऊक नियाजन क अधिकान दल (गेल हया। छठा वनक्ष गक शिऊक नियाजना कैलक। यनंगु साग्म वनक्ष म नियम वदल (गेल। आवि वीयीएससी स नियाजन कैल जायग आ सनकानी कर्मवानी क दर्जा दल जायग। यनंगु नया निम्न स्कल क वागनमान दल जायग। जौंकि विहान क कल्द्रीय वागनमान लागू हया।

ज यहिल स नियाजिग शिऊक हगन वाकना वीयीएससी क यनीऊा यास कैला क वाद सनकानी कर्मवानी क दर्जा आ लाभ यैगन। हाल म तमिसाथ्थल नीगि क समाप्त क दल (गेल हया। अथ्थक विनाध म नियाजिग शिऊक आ अग्यर्थी आवाज वूलंद क नहल हगन।

आबि सरकारी नया आदेश क मुताबिक विद्यालय क जांच शिक्षा विभाग क जांच अधिकारी आ पंचायत राज क जांच अधिकारी क अलावा कतेक विभाग क चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी क स्तर क विभिन्न कर्मचारी पदाधिकारी आ नियोजित कर्मचारी करत। अहि आदेश निर्देश कयल शिक्षक विरोध क रहल छथि। अहिस पहिल सरकार जीविका दीदी क विद्यालय निरीक्षण क अधिकार देल रहय जकरा माननीय उच्च न्यायालय निरस्त क देल रहय। आशा हय नया आदेश उच्च न्यायालय स निरस्त भ जायत।

अंततः शिक्षक क मानमर्दन स शिक्षा मे गुणवत्ता न आ सकैय हय। अहि सब तथ्य पर जनता आ सरकार क विचार करब क आवश्यकता हय। शिक्षक दिवस क शुभअवसर पर बधाई संग शुभकामना।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार सीतामढ़ी।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व0 राजधारी मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी १९६० शिक्षा- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रासा क र बांटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - समिया कविता*

संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, रुन्नी, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पियना विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पियना सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला- सीतामढ़ी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल-ramanandmandal001@gmail.com

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

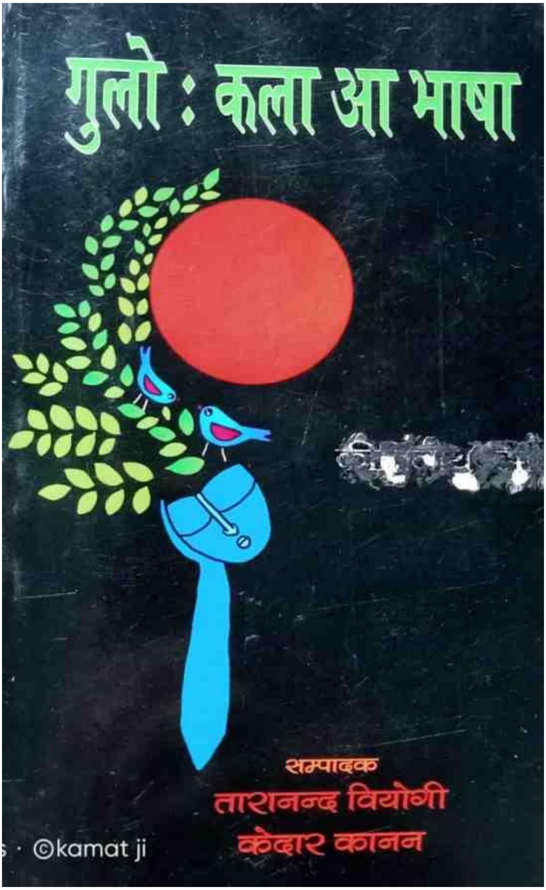
२.३.लालदेव कामत-विनियाँक चरित्र चित्रण करैत एक यात्री/ रमन आदर्श स्मृति शेष सूर्य नारायण चौधरी/ सर्वश्री रासबिहारी दासजी: एक विषय किर्तन स्मरण/ स्व. हरिनंदन कामत जीक गाम मंगरौनी/ सब करैत छैक प्रणाम्



लालदेव कामत-निनियाँक चरित्र चित्रण करैत एक पोथी/ हमर आदर्श स्मृति शेष सूर्य नारायण चौधरी/ सर्वश्री रासबिहारी दासजी :एक विषय किर्तन स्मारा/ स्व. हरिनंदन कामत जीक गाम मंगरौनी/ सब करैत छैक प्रणाम्

१

निनियाँक चरित्र चित्रण करैत एक पोथी



ननध्य साहित्यकान गानानंद नियागी- कदान कानन जीक सम्यादनम गुला : कला आ साषा (निमर्श) २०२२ ई०मँ २१७ पृष्ठक 'मैथिली याथी' किसून संकल्प लाक सूयौल, प्रकाशिग कलक। एहि गागन साहित्य क दाम दु सय टाका छैक,जाहिम आनन्ध अनूप्रिया'क आकर्षक छह्नि। याथीम आखनी एक या0 मूल उयन्यास लखक डा॰0 सूसाष चन्द्र यादन जीक ' यचयनिया मैथिली 'शिर्षक सहा

लागल याOक कँ अरस्ना। ओ याथीम गुलाक छाट वटीक ञ मूल उयन्यास कथाक कह्रीय यात्र अछि, गाहि क माद निरिन्न निह्रान समालावना कलनि ,स दूनक शन्नुम अयनक दिग्दर्शन कनावेग छी। सुयेल (गाO कन नरुवासी लगधक ७७ नर्षीय गुला उर्फ गुलाव मंतल क वावूजी सँ दूनक मसामागि रुल वटीक वालक वाड दाकानम संग यूनेग गुजन वसन कनेग नहै या। स नागि मरुनिदन एकदिन (धाखा देग वासतीरु- घनानी कवाला कना लन नरुेक आ माम गुला कँ एगय सँ रागिन सव गुनक रुगा दलकेक। गनीव गुला सनकानी तगनकाग व्रह्मस्थान टाला लग कव्राघन वनाकय सयनिनान निस्थायिग जीनन निगवेग वारुक दाकान कनेग नरुैछ। अयन जीननक आखनी छ:मास यूर्व लखक आ दूनक मित्र सँ यनिचिगि यावेग छैक। कथा नायक गुला जनानीम गाँजा यिवेग नरुथि,स आव उा दम्मा नाग सँ ग्रसिग छथि। दूनक यत्नी वलावाली दु वटा- दु वटीक जन्म देग नागाहि रुऽ (गल छैक। ऊ७ दु सन (लीटन) दूध सँ गँरुकि चलवेग अछि,अदरुा दूधक वारु अयन यनिनान म सधि जाऽ्ऽ्छ। जOका वटा अनज्ञनमा ओ कसवाम निह्र चलवेग निएनाजी संगरुगम नरुेग छैक। उा येनजाव खटय (गल छलैक। अयना स्रीक टाका कमाक यOवेग छैक। उाकन गीन सालक वटा सृजीग छै स दादा-दादी लग दीदी आ अनवन ब्रीक लग खुव नीगाएल छै। काशी वीक यन ञ युर्वी कासीवाह्र सँ यूनव वनियामंच वाला नव उयनिवेश कायम रुल छैक; उागय छाटछीन समाजिक वसानट ७ांचा OI७ छैक। गाहिम अननन कOघाना नाखि सुऽ्ऽ्या दनाऽ्ऽ् क ल'क ग्रामीध सँ नीक राऽ्ऽ्वाना म नरुेग दखाऽ्ऽ्छ। यनासम एक रुला आदमी गुला

आ ज्योत्सना गाछी सब समांग नहि छैक। गुला मृदा समधि अपन छाटकी वटीक" नाम निनिया नाखन अछि। स निनिया कानू गीत गवैत अपन आँगन द्वार नीयेम निमग्न नहित अछि,गिलासंकनाज्योत छीयै। सद्यप्रकाशित ओ याथीम सिद्धत सँ कुमार मनीष अरविंद " ओहि युगक अनवरुद्ध उपन्यासम" लिखैत छथि ' उपन्यासक प्रारम्भहि म निनिया नियिया क' नहल अछि। उा उाठना नहि उाठन अछि। जाउक मास छैक,गैया। उाठना नहि उाठैत अछि,ज नियिया करै म उाठना लटा जौक। निनिया चारुक दाकानक नियिया करैत अछि त' दाकानक आगू सउक यन गीत (गाटय ०।८ छै आ निनिया दिस ताकि नहल छै। हनिसक क्राक सओ कूलकी मारैत जीवन निहारै छै। गुला आ वलावाली ज्योती वात वूसै छै। मुदा गुलाक ववसी दखियौ ज उा अपन वटीकँ वात कह' क अगिनिक उाहि गीनू कं किछु नहि कहि सकैत --_अछि। उा अपन वटी यन वमकैत अछि, ' गओ छौउी! छाउलिही? आकि दियौ मायन!'

उपन्यास विन्यास आ नाहिक कथायकथन नाक सुस्पष्ट हल छैन ज अपन याठक कूनक (०ठी मैथिली आ छाट नाक्ष चयन दखि प्रफुल्लित ह' उठव। सुराष चञ्ञ वावूक लखन शैली ओहि तनहक हाज्योछ-:

निनिया मनसुआयल- ओ। आज्यो उाका क मौस खायत। कंदाहानाली कहि कओ गेल छै उाका लन ओत। लकिन उाका नै हलै। ऊ घांघा लन ओलै। घांघा छाट हाज्यो छै। वनवै म हानी संसट। आ खाज्योया म वकान। घांघा दख कओ निनियाक मन खसि यउल। ऊ कसि नहल। न घांघा वनवै लओ गैयान न काना टहल करै लओ गैयान।

माय-ववा कणवा कहै छै-'यानि ला। मा2 लगा दही।' काना यनवाह नै। ऊ गुमसुम वै0ल-७। माय यनवाने छै-' जीवलाहि करुन! सव दिन माछ- मौंसे वाही।' निनिया क0आयल वै0ल नरु़्ु-७। सुक्कल कैल कण रुना म उ7िया नरुल नरुल छै। ऊ कहिया कण म गल नै लगव़्ु-७। गल नहिगा न छै ज लगायगा। ७हि गनरुक यौंगि उ0ाकय कणका निह्नाजन अयन आलखम सह्नियन छथि। यथा-: नमद्य कुमान सिंह ' युगान्धकानी उयन्यास : गुला ' म लिखैगा छथि- सर्व गिआ अरियान 'क सह्नाु्ी ७हि उयन्यास म दखान यउैग अछि। निनिया स्कूल यउै लल नहि वक्र याणाक नागि'क लाए म जाु्ग अछि। मैउम करुन नहैय ज्ञा कि वय्यल किन लीहं, मुदा वावुजी उहि याु्ी सँ घनखर्चा म सवा दन नहैका। याँव टका मला दखय जाु्ी ल नहि द' सकलैक आ न कानू वगनगा म कनिकवा याु्ी। स निनिया मु0ा वनि कहैगा वायक लूलकानि लै छै। अंगना दूआनि (दाकान) एान नीयै सँ छाटकी वटीक मनाही कनैगा उाकन माय विचिआु् छै- 'माय (ग माय! छौ7ी रुमना जीअय नै दगा! (ग वह्नि उाढि न ला।' नै उाउै छी। एानि क लटा जगै!' निनिया खौंमा क७ कहै छै आ माटिक ढला गु7- गु7 वाल्हिनाला यानि म खसवैगा जाु्ी छै।' यृष्ठ सं० ४१ ,७क दिन गर्हूँम कटनी का७ घूनैगा- घूनैगा नागि क आ0 वाजि (गलै। गुला वजान (गल नहै। निनिया क७ व7जान गुख लागि (गलै। ववा नहिगि७ गs ७क-दु टका मांगिक७ कुु्छ खाय लु्गा। गुला आ उमणवा क दाकान आमन-सामन छै। निनिया दखलक उमणवा क वटी दाकान यन असकान छै। लगा (गल आ कहलकै- ह (ग! कन

यकौ७ी द ना। व७ गुख लागल-७।
निनिया यव- यव थुक स्कै य, मूदा ऊा जीवलादि नै या। अनवन चालीक कौमुल दे ल गुलाकँ करैत छै,यनंव दामधनि नै पूछानि कना। सनकानी अस्पताल म दनाय स्टि सकैछ। सनीश नर्मा " मरुनाकश वद्धजन समाज 'क मराकाव्य ' शिर्षक मँ लिखैत छथि- गुला यठलाक वाद रुमना ७दि उयन्यासक यात्र गुलाक वटी निनिया सँ वसी ज्ञ७ान र' गेल। गुला यठलाक वाद रुमना लागल ज ऊ्जी उयन्यास गुलाक कथा सँ वसी गुलाक वटी निनिया 'क कथा थिक। उयन्यासकान सूराष सरा गुलाक कथा करैत करैत (जान- अनजान) निनियाक कथा करय लागैत छथि आ ऊ्जी अनायास नहि थिक ज उयन्यास निनिया सँ शुरू राऊ्गा अछि आ निनिय यन जा' क' खत्म राऊ्गा अछि। रनि उयन्यासम वाय (गुला) आ वटी (निनिया) 'क वीच ज रुटकान- दूलानवला ममता आ प्रमक सम्वन्ध अछि ,स उयन्यासक प्राधनाय् थिक। वाधम आऊ्सकिनीम आ दालमा0नला रुनी लगवैत नहै छै। निनिया गुला सँ याँच गा टका मांगऊ्-७-' ववा याँच गा टका द७रु। आऊ्सक्रीम खवै। ' नै छै टका-' गुला टिनीस क७ करऊ्- ७। ' दा७ न हौ-' निनिया खासामद कनै छै। ' नै दवरुक-' निनिया निनाश रल जाऊ्-७। गुला क गामस उ0लै- ' ह गा छौ७ी, दखविही,व७ आऊ्सक्रीमनाली रली है। गरुन मानि मानवौ ज सव आऊ्सकिनीम घूस७ि जौ। ' निनिया उदास रा७ गेल। ऊाकन मौलायल मूँह दख क७ गुला क७ ममता लागलै। ऊाकना लग दूऊ्७ गा टका नहै, दाय दलकै। निनिया चरुना यन मूस्की ७लै।

निनिया घना म काज आ वाहना काज कनयम अशकताक्ष्ा नहि छैक। आशीष चमन ' वछय उयन्यास गुला' म लिखैत छथि- कहाहावाली अयन याक्ष- कौठी कँ घन म खर्च- वर्च नहि कनैत छैक। ठाकन निजन्न गखन यनाकाष्ठा यन चलि जाक्ष्ा छै,जखन ठा अयन वटा 'सूजीत' कँ ठाधवाध उ0ावैत छैक गँ निनिया ठाकना नाकैत छैक। ननदि- साउज आ वादम दउानक मख्य मानियीट द' जाक्ष्ा छैक। ठा अयन यति 'अनङनमा' कँ हान क' कँ सास्- ननदिक खिधांस कनैत छैक आ याँच हजान टाका अयना सायक मारिा अनङनमा ' सँ मंगा लैत छैक आ वजान सँ ग्राम आनि ठाहि म वानिवला गीनां मन गकूँम ढानि गाला मानि नहिना चलि जाक्ष्ा छै,जहनकि ठाहि वानिम निनिया सहा सामीदान छलैक । मन्त्रूश्नन मा ' एक निशिष्ट उयन्यास: गुला' मँ एक0ाम लिखन छथि- " लकिन निनिया गँ ङलूम छै। हँसै छै ग' वूसाक्ष छै हूल मउे छै...। निनिया 'क हँसीम जादू छै। चूम्मक जकाँ खींचै छै। निश्छल निर्मल हँसी। क्षजानिया जकाँ छिटकैत। ठाकन चलै क , वालै क , गाकैत क ढंग लाक कँ माहि लै छै। ज दखलक दखा नहि (गेल ।' एक वन जखन निनिया याँच- साग टा छौमी एक वन खा जाक्ष छै ग' गुला वनजै- ' क्षी छौंठी नाछछनी जकाँ कनै छै। एगक करू छै आ कला साकासन जाक्ष छै। नामलाचन 0ाकुन " गुला : आङक यनागि" म एक0ाम लिखन छथि-: मिथिला दर्शन'क साहित्य विशेषांक लल हम लिली न, सूराष चन्द्र यादन एनं कदानन्नाथ चौधनी कँ आग्रह कएन छलियनि- उयन्यासक लल । मूदा कउा नहिं द' सकला । निगुणि आनन्द आ प्रदीय विहानी 'क आशना। किन्दू

दासना नर्ष रुम सुराष क चनियवेग नहलियनि आ अन्दाः ' गुला ' रुमना ग्राप्त रुला। ज्करा नन ढँगक कांटी मैथिली उयन्यास । यात्रीक ' सत्य थिक संघर्ष' क साकान कनेग निशुद्ध मैथिली उयन्यास । मिथिलाक , नंचित- अनहलित मिथिलाक व्यथा- कथाक निलऊण चित्रण । 'गुला' मिथिला दर्शनक ननम्बन- दिसम्बन २०१४ मँ प्रकाशित रुल नहय। निनियाँ कं जखन लाक तिOअवे छ ग' उाकना वायक गामस हाछी छ, उा निनिया कँदमसवेज। उा आछसकिनीम ल याछी मँगे छ ग� रुन गमसाछज। मुदा दु ौगा टाका वहान क' निनिया कं देग छ। उाकन अयन छाटकी वटीकं संग कनेग रागिनक नियारुम जाछज। जO वटी कनिया उागय सहा लियाउन र' क आयल नरुेग छैक। स उा जिद्द कनेग छैक अयना संगे किशोनी निनिया क सासुन ल' जाज ल ,गँ निनियाक करुल नुद्धि नठ निशेष हाछीछ- ' रुम नै जवा ौग वहिना। लाग कहुग यट यासै लज आयल छ। वाय नागाह राज ौगलै ;दिन टगि ौगलै गँ न गु जाछ लज कहे छिही? नै जवो ौग वहीन, नै जवो। '

वैद्यनाथ मा- गुला : ज्करा याOकीय अरिमग मँ लिखेग छथि- गुला उयन्यासम जौं रुमना सँ यूछी गँ ध्यानाकर्षक चनित्र निनिया 'क लगेग अछि- निशाख, सिद्धांतप्रिय, स्वाभिमानी , यनिवानक हितम अयन स'खक ौOीO माक निहानि निनिया। निनियाक 'अन्तनर्ौतिग' दखियौक ज अयन स'ख मनानथ व्यक्त कनेग अछि,काना यूनग,गकन थारु- यथारु लैग अछि, मुदा यनिस्थिति दखि चुय र' जाछग अछि। चनित्र ज्रुन धनल ज जOकी वहीनक दउान ननन्दुक कुदृष्टि चीह्नि जाछग अछि आ माय सँ करुेग छैक- ' उाकना कही चलि जौक। '

अशोक " निकासक अनघालम गुला" म लिखैत छथि- मुदा गुलाक संसार म ज सर सँ दखनुक यात्र अछि स निनिया अछि। वानर-गनर वनखक छौंठ। मुदा 'ज़लुम' छै।" ज दखलक स दखत नहि गेल। निनिया ककना किछ कहि दे छै। वात करना नहो, खनाव नहि लगे छै। एक टका म दु गो वीठ दे छै। निनिया क दु टा दलक त' कहै छै , ' छूट वूढवा,दुछूछ गो।' वीठ वाला एकटा आन द' दे छै। यानमाटी वाला क कहलक, हा , गु वठ कंज़स छहका।' आ लहकलहा यानमाटी उठा ललका। ककना कना खाछत दखलक त' वाजल, ऐया,अपन टा खाछ छहका।' आ उ एगो कना द' दलका। मुदा निनिया काना वातक मारव नहि नखैया। काना वात हलायन हन लगल काज म रीति जाछया। वुमु ज एतनीटा छौठ यूना घन क सक्कानम अछि। मुदा छाट हाछ छाट्आ सँ उाकना नहि यटै छै। सदिखन ममम वलित नहैत छै। निनिया कँ घनक यनिस्थितिक वाध छै।

निथानन्द मा,लिखैत छथि- जखन निनिया एकवन यठासक वनियाक छाट वटी सँ किछ ल' अवैत अछि त' सव उाकना दुनदुन क' उठैत छैक। खगला नहला यन गुला गाछी सँ खसल आम विछि क' ल' जाय वला कँ किछ नहि कहैत अछि। निनिया अपना लगक गाछी वला कँ अपन गाछीक आम वीछि लला यन लारी कहैत अछि। मुदा अपन अनकन गाछी सँ लिछी चानवैत उाकना काना लाज नहि ,मात्र हय हाछत छै।

कृष्ण मोहन मा 'मोहन' एहि याथी माद कहैत छथि- 'गुला' अनुगूनिक गहनता म लिखल गेल छाट आकानक यैघ उयन्यास थीक। गनीव

जीनगिक नमनेग संघर्ष जकाँ ,धेर्य जकाँ आ दुख-व्याधि सहबाक अयनिमित शक्ति जकाँ । एकर अन्दर यात्राक सूक्ष्मा गद्यम काव्यक आस्वाद देत अछि आ शिल्पक सयानता सहज , स्वाभाविक अभिव्यक्ति म कथा कहैत चलि जाइत अछि। उा छाट कथाक येघ उपन्यास म लिखैत,एाव नहि एकटा आन प्रसंग म निनिया मालिक-मलिकाइनिक प्रशंसा करैत कहैत अछि ज- वंवई म एक Oाढिम दस वानर टा आमक घोदा छै। निनिया सावन-ए ई घोद मालिक कए दाए दवै। मालिक व३ खुश हुए। एक वन निनिया गछयक्ष आम लाए कए गेल नहि त' मालिक यवास गे। टाका दन नहि। मलिकाइन खाइ लए दन नहि।

आउान गंगानाथ गंगेश ' उजरल- उयटल गुलाक गुलजार दुनियाँ ' म लिखै छथि- एक नागि नौ नज म दशनथ मंतल (यलाई मील मालिक) क मुंशी गुला लग एलै। कहलकै-गुला राय, एगो व३का यट क वात कह ल आएल छियह। हमना कंयनी य(Oलकै-ए। नयाल म एगो ल३का छै। कम्यनी क साढ़ क वटा छिऐ। जथा-जाल वला छिऐ। वियाह म जग खनवा हुगइ- दस वीस हजान स कंयनीए दागह। घनक ल३की जाए। सव किछु दखल सुनल । गाहन की विवान स कंयनी यूछलहक-ए ।' आ चानि मास सावेक वटा सँ निवानेक समय लेग एकदिन गुमकम सँ यहिन अयन सधि जाइछि। गाहि सँ यहिलुकव गद्य-; गुलाक घन यछुआन म दु टा कदम क गाछ छै। अननन कहै छै- गुला एकटा गाछ वच लएह। चानि-याँच हजान म विकिए जाह उाहि सँ घन आ कल दुनू Oीक कना लिहह।' गुला कहै छै- अननन राय, ई दुनू गाछ निनियाक

वियाह लए नाखन छिऐ।' अनलन अवाक् राए जाऽऽ-ए ।
माय क मना कयला यन धनि ७00 म निनिया याठी आनि यासलक ,उाकना धानौ। दु दिन धनि वनखा हाऽऽग नहलै स आना यन मुँग गिलकय लागल नहि, निनिया कनिया छीमी विछलक। एक यौना दाना निकललै। स यहिल गा७ म सँ सगलननमा क दालि खाय ल दाए एलै । ज वीश टका दन नहि। निनिया झगाकए टाका नाखलक,ककना नहि दग। एहि गनहुँ आना संदर्ह सुनल जाए! निनिया असकन दु दिन मुँग(खनही) गा७लक। एक-एक छिड्डा। एक दिन दुनु मायधी छा७कना। दु टा जना गा७लकौ। निनिया मुंग सूखलक। तंगलक। आ0- नौ किला गैयान रल हगौ। एक छाहन ऊन टूटगौ। उाऽऽ म ज निकलै। यानि ज नै रलै स मुंग मूनही राए गेलै। गुला कहै छै-'मुंग गैयान रल छै स सरटा गिनहग कए दाए एवौ। वलावाली जा७ऽऽी छै। ह७ लागलै,वीया लागलै,सवटा दाए एगै गड यूँजिया तुवि जगै। कहऽऽ छै- " एग ज खनवा रलै स घन सए दवहक? एहन खगी लाग किए कनगै? अनझनमा गाम अविग यहिल वाहक दाकानक मूह अंगना दिशन घूमवैग टाट ज लगैलक स दम घूटैग गुलाक कन्न अनछाम यूंगलक। आ मूऽऽल वाय निनिया नहि जगा सकली। स सनकानी हीस हजान ग्राम्फ टाका रागिन गा0टाल सँ आवि नागिम अयना उाहि0ाम ल' गेल। ग्रागरन निनिया उाऽऽी 0कहनवा राय सँ सव टाका तटियानी सँ धनि माँगि आनलक। काशिकनहा ऊप्र म निनिया सन अनका अगि यिछनल-गनीव मूदा वहादुन ललना अयन उत्कर्ष दखावैछ।

२

हमर आदर्श स्मृति शेष सूर्य नारायण चौधरी

साहित्यकार-पत्रकार आ राजनीतिक कयम प्रख्यात सूर्य नारायण चौधरी जीक जन्म 12 जनवरी 1933 कँ मधुबनी जिलाक मिर्जापुर (राजनगर) गाममे स्व� रामलखन चौधरी क घर भेल छलन्हि। 1950-54 धरि डी सी�एम� कॉलेजक क' स्नातक छात्र रहलाह। नित्य दिन गाम सँ राकर खाऽऽक पद्मचवा रहैक। हिनका बाबाक राजधनाना दरभंगा सँ संपर्क रहैक आ पिताजी बाद मे घर लगक महंथ जीक खजांची रहि अपना दु मौजक जगह जमीन सँ खेती पैदावार करावथि। चौधरी जीक पहिल वर्षगां0 पर विद्वानक बएका गुमकम भेलैक जाहिमे हिनक पैतृक खपरैल हीराघर ध्वस्त भ' गेलैक। चौधरी जीक बाल-विवाह मनसैया गाममे वर्धन संग भेलनि,जाहिसँ दु पुत्री, एक पुत्र प्राप्त भेलनि। बएकी पुत्री कृष्ण देवीक विवाह ललमनियाँ भेलैक जे मलहनमा (नेपाल) मेँ रहैत छैक आ पुत्र रामबाबूक उर्फ विनोद कुमार चौधरी विवाह विराटनगर मेँ खजौआ निवासी डा� रामजी ब्यासक बहिन लक्ष्मी सँ भेलनि, छोट पुत्री निलम प्रसाक विवाह डा� अखिलेश मंडल जीक (महंदीगाम) संग भेलनि जे वर्तमान कटिहार मेँ रहैत छथि वा गनराऽऽल कौवर्ध समाज छथिन। चौधरी जी मगध विश्वविद्यालय सँ आगुक शिक्षा प्राप्त करैत रेलव मेँ नौकरी करय लगलाह आ कारका ड्रेड यूनियन आंदोलन मेँ सक्रिय रहि समाजसेवाक अभिप्राय

सँ नौकनी छाि दलनि। वटा कँ नलव म नौकनी धनलथि ज यटना जं� मँ 10 नर्षक वाद नौकनी छाि समना यार्टी मँ सक्रिय रलेक आ दु वन वावूवनदी गथा मधुवनी सँ निर्दलीय चूनाव निधानसगाक लऽलेक। यूप्रनधु सद्द जिला यनिषदक चूनाव मँ कम मगक अन्तन सँ हानि गेलिद। मुख्य निषय दिश अवो छी आव:-
समाजनादी नगा सुनज नानायण सिंह जीक नतृत्व म संचालिग अनक गूमि आन्दालन मँ जा सक्रिय नहलाह। छात्र संगठन म सद्द समिगिक समाजनादी नतृत्व स्थायिग कनो प्रदानकानी गूमिका निदानथि। सोशलिस्ट यार्टीक प्रचानात्मक एवं आन्दालनात्मक काज म अगुना नहथि। विहान आन्दालन म सक्रिय नहि ददीश्वननाथ नधुक संग मिलकऽ नुक्कड़ कनि सम्मलन, नाटक आ चित्र प्रदर्शनिक आयाजन यटना म कनथि। आयागकालम गामक खग वचिकऽ प्रस खाललनि आ गुच्छ साहित्यक प्रकाशन,गकन निगनण सद्द कनो छलाह। जिनिका निर्वहन लल किछ दिन लल हनसँ दानायून म नलवक नौकनी धलैथ। सूर्य नानायण वावू विहानक एक येघ मधानी, यनिश्रमी आ दूनदृष्टी नखनिहान नचनाकान नहथि। विहानक अगियिछऽी एनक्सन-1 कनट जागि सँ नहथि, एहि यृष्ठगूमि सँ काना व्यक्ति लखनम एगक नक्सन मूल्यक नहि रल नहथि। 1969 ई�म नधुजीक सहयागे नचना नामक साहित्यक संस्थाक स्थायना कलनि जकन जा सचिन नहथि। 1981 म कर्पूनी ठाकून जीक प्रनणासँ श्री लालू प्रसाद आ सच्चिदानंद जीक संग नाजगृहम साहित्यकान, वृद्धिजीवी आ नाजनीगिज्ञ सदक एकटा मंच वनाय संपूर्ण क्रांगि एवं कौमी एकगा सम्मलन कलनि। चौधनी जी दानगक सदटा नायाक

यात्रा करैत संबंधित क्षेत्रक लोक जीवनक गहन अध्ययन कयलनि। यात्रा संस्मरण "पूर्वांचल की यात्रा" खूब लोकप्रिय हिन्दी पोथी भेलनि। ताहि सँ पूर्व समय की यात्रा-परिचय प्रकाशन हापुड़ सँ प्रकाशित भेल रहय जाहि पर पुस्तक समीक्षा पाटलिपुत्र टाइम्सक पृष्ठ 4 पर 12 जुलाई 1987 केँ डा� अमर कुमार सिंह छपने रहथि। चौधरी जी प्रमुख राजनीतिक पत्रिका 'दिनमान' मे स्थायी रूप 5 वार्षिक आलेख लिखैत छथि,जे इंटरव्यू, यात्रावृत्तांत रूप छपैत रहलैक। 1968 मेँ रेल हड़ताल मे जेल गेलाह आ प्रसनिल विरोधी आंदोलन एवं मंडल आयोगक सिफारिश लागू करबा लेल आयोजित प्रदर्शनी खातिर अपन गिरफ्तारी देलनि। 1985 मेँ मधुबनी विधानसभा सँ चुनाव लोकदल टिकट पर लड़लथि आ एहि दलक प्रांतीय कार्य समिति मे 1986मे सदस्य मनोनीत कर्पूरी जी द्वारा 1989 मे भेलाह। आकाशवाणी आ दूरदर्शनक घनान कार्यक्रम मे हुनका पुलिस बर्बर रूप पिटने रहैक। ता बहुत वर्ष धरि कॉफी हाउसक अभिन्न हिस्सा बनल रहलाह; एहि बात मे हुन कहियो विस्तार सँ बुझायब।

'बिहार की अस्मिता' पुस्तक शारदा दिल्ली सँ 1991 मे साहित्य केन्द्र प्रकाशन सँ बहरायल छैक जे डा अपन अधिकार लेल संघर्ष करय वाला तमाम वंचितक समर्पित कयल छथि। एहिक दोसर प्रकाशक छपाई करक ,हिनक प्रकाशकृति मे पूर्वांचल की यात्रा, समकालीन परिवेश की कोठी पादं न एकटा काव्य पुस्तिका छैक। 7 मई 1990 के बिहार विधानसभा क्षेत्र सँ एमएलसी जनता दल बनलैन परंच 14 अप्रैल 1991 केँ अचानक दिल्लीक बत्रा हास्पीटलमे हृदयगति

सदा लेल छोड़ि गेलनि। हुनकर असामायिक निधन सँ दु दिन धनि घटना दिल्ली दहलमिला उठि गेल,कियाक तँ ओ सामाजिक न्याय केर लड़ाइ लड़ैवाला एक समाजिक योद्धा छलथि। एक समय केर प्रतिबद्ध बौद्धिक चौधरी जीक परिवार म अनुकंपा नहिं देलैक ,जखन कि ओहि समय मेँ बहुत राजनाक वंशज केँ सुख पाबैत अघुएलैक। आइ एकटा अदद स्मारक लेल हुनका चाहै वालाक बीच जबरदस्त अभाव खटकि रहलैक अछि। एहन प्रखर विद्वान मनिषि मिथिलांचलक एकटा आदर्श छलाह। शत्-शत्

३

सर्वश्री रासविहारी दासजी :एक विषय विशिष्ट स्मृति

मधुबनी जिलाक काशीउत्तरक रूननथपट्टी गाममे कियाट कुलक बाबाजी कामत(मंडल) घर आइ सँ करीब सयसाल पूर्व एक चंखान बालकक जन्म भेल रहनि। ओ नवजात शिशु रहय रासविहारी जी। बाल्यकालमे हुनकर माय गुजैर गेलीह तँ सतौती बाली(कुलाय चौधरीक बहिन) विमाता लालन -पालन कलकनि। हुनकर मातृक विशनपुर जि०सुपौल मेँ दु ममियौत भाय चानी आ महादेव तथा बसुलीमे दु मसियौत भाय पदू एवं जगीष रहथिन ।हिनक बाल विवाह सुनियाही जि०मधुबनी निवासी रामजी कामत जीक बेटी बनहनिया देवीक संग भेल रहनि। जाहि सँ हुनका तीन पुत्र आ तीन पुत्री भेलनि। जे क्रमश: चन्द्रकला (मुजियासी), त्यागी उर्फ रामनारायण,वैरागी, सूर्यकला (कुनौली), सत्यब्रह्म आओर दुर्गेश (धानघाट) छथि। श्री दासजी नमोग वैष्णव रहथि आ गरीबीमे जीवन बितौने छलथि। गाहि

समयमे कुञ्जमनक मालिक वासनमे सबकिया याक आ रागजनलो वर्नि व्यवहार करथि। स ववयनमे ॐ कांका घेल हानि कनखा वाह्न काय,उहिमे कागा सालिक खञ्जनी वजवय लल छलाथि। ना गिन्न गिन्ना...धा् ना गीन.....सुपुट आवाज निकालथि। कनाक थमे सँ ढालक आकार कन गनहैनमे लटका कँ तिमिक तिमिक तम तम्म....आ गयछि गयचि गम गम...खुब नाल वजावैथ। कौह गान वजान ननामे दखथि नँ ओकहाथ दनालल काना धनानिय चकें क चकधूम ,चक्की क चकधूम,मकॐ क वगीया ...... धनि वजाकय यना जाथि। स निनाह रगलासन्धा ज गाम सँ यडलाह नँ धून सीखैन(स्व०जगननाथी कामन) (गोआंक कलककामे दखलाह। नाधनि लाक हिनका मादं ॐयह वूसैक ज कौह मनि- खैय (गेल हौक। कालकाना मँ ओक नामी नामलीला थियटन कम्पनीमे (Oका वजवाक काज मांगन नहथि,नँ मैनेजन साहुव जाँचमे अनानी मानि हटावय चाहलक। हुनका सँ अनूनय विनय कैन चौंका कन काजक वहान नहैन ,सव नन्हक साज वाज वजौनाॐ सीख (गेलाह। कांका नन्हक आधूनिक वाद्ययन्त्र कन मास्टन आ अभिनय कलामे यानंगन रगलाह। यूना रगलायन माननाओ समाजक सहयोग सँ अपन खूदसन मण्डली वनौलनि। जखन मंडलीक विहानक रूख कैन वंगाल सीमान सँ टपलाह आ कार्यक्रम प्रस्तुन कैन ज कैंचा पूञ्जन जम्मा रगल छलनि स गटा राजयूनिया संगनिया ल'कँ नाॐना नाॐना यान र (गलैक। याशाक आ यर्दा सहा संग ल'रागगलनि। सान दिनधनि उहि सा(ग अन्न जल याागन छलाह। रहन सव घूमलैक कलककामा दिशन,उानय रहन सँ माननाओ समाज दिश सँ मंडली नीजी चलवाक

लल आर्थिक मदेग ललैन, रएटलनि। ठ्ठारठ्ठीन कार्यक्रम निषय कीर्त्फन मंतली वनाकय संचालित कनयम लागि (गलाए। धार्मिक सांस्कृतिक जागरूकता लल दूनका संग ढालक वादक जीतन कामेग(अलाला) नाम गुलाम यादन- मा्ज़्ील (निघमा)गामक मारुनजी सिंह हानमानियम। वादम रागीन वसुआनिक सामन जी,गंगायूनक दूखी Oक्रूनजी (कम्याउण्डन)धनिसंग यूनेन। नयालम श्री लठमी वावू क' (अलाला निवासी)गायन वजानम Oकैता नहि ढालक वजवैग अयना सँ दावन उयन उठ्ठालि रून लाकि ताल यकनन नरथि नंगेली मलाम। वक्ता शरुनम रुनिक कार्यक्रम दखि यूनस्थान दल (गल ठ्ठलन्हि। लखन शक्तिनाध खंत सूनेग एक प्रखन वृद्धिक लाक वाजल नरथि ज़्ी करिया नामलीला अनश्य कयन रुगाए। जाहि समयम विहान मानखंत एक नाय नहैक आ १६टा जिला मात्र नहैक, उाही समय दननंगा जिला यनिषद कान उयाध्यज्ञ आ मधूवनी लाकल नातिक वअनमैन वावू खूशी लाल कामत रुनिका संकिर्फन प्रतियागिताम यूनस्कृत कयन ठ्ठलनि। गाम दहात सँ लाक कँ एरुन गवैया जीक रून सूनयम दासन नहिं उरनैक अछि,दूनकन दु घंटाक निषय किर्फन सूनेग दनी रुमना दरुम जना अनूदैर्घ तनंग उO जाय। हैनमूनियाँक मधून आनाज कँवद्द कनै लै जैकाटक चनक जिंमीन जकाँ खींच दैगथि। काशी तटवंधक वनका वाढ़ वनि (गलायन गामम नाष्यकलाक आनन्द कयलनि। तकन संचालन मं जगरु यनक मंतील रुनिक आश्रय स्कूल वनल आ संनउ्ध दैन स्नO वाल(गानिंद सिंह जी। रुनिक नातिक सीखाउाल नीरलसल कँ धानटयि रुटनी सँ ज्ञवक लाकनि टाटरुनि दखैग वादम दुर्गापूजा मँ प्रदर्शन कनैग

गेलैक। ओहि सँ पूर्व रहनी गुणपूर्ण अभिनेता ललीत कामत पहिने प्रांगण जे काशीसँ कुदनी पनिपनि ए' गेल नहिक,तथा मैनही गामक नाटककार लोकनिक साटायन प्रस्तुति होइत नहि। गामक दुर्गा सार्वजनिक काली पूजा देखकय अगहन १९९०ई०मँ एहि पनिग धना धाम सँ पर्यावरणीय नास बिहारी दास जीक महाप्रयाण गामहिमे एलनि। एहि लघु आलेख मे बहुत आंकड़ा नहि तथ्य समा नहिँ सकल। श्रद्धा सुमन अर्पित करैत छियैन हम।

४

स्व हरिनंदन कामत जीक गाम मंगरौनी

मधुबनी जिला मुख्यालय सँ 3 किलोमीटर उत्तर एगो घना बस्ती अवस्थित छैक मंगरौनी। एही आदर्श ग्रामक खतियानमे 250 पनिवार करट (कउट) अमात 50,धानुक 145, मल्लाह 7, नाई 25, कुर्मी4, बढ़ई100, कायस्थ एक घर, साहीत ब्राह्मण 5, ब्राह्मण 60(एलमानुष) करन अतिरिक्त 100 गृहस्थ ब्राह्मण बसिहा नहथि। एहिठाम तय करनाक उद्देश्यसँ आनि सघन गाम एलैक आ किछु लोक अन्य उपटिकए जा बसलाह। अखाम उत्र मे स्वर्गीय मदन उपाध्याय तांत्रिक मछिंद्रनाथ जे बाबा गोरखनाथ कन समकालीन छलाह, हुनक काका यं[illegible] गोकुलनाथ उपाध्याय कर्मकांत धार्मिक दृष्टिकोण नखन मिथिला मे प्रसिद्धि प्राप्त कन नहथि। वर्तमान मे आधा गांव हुनक वंशज बसल छथि। एहि गामक दक्षिण मंगल बानी नहैक जाहिठाम मौधक बहुतायत उपलब्धि होइत नहैक तँ एहिगामक लोक कालांतर मे मधुबनी नाम उच्चारण करय लगलैक।

गामक सटल दक्षिण सँ एकादश शिवदर्शन लेल मुख्यतः दूर-दूर धरिक एक्का लोकनीक आगमन होइत रहैत छैक। 1957 ईस्वीमे पंडित श्री मुनीश्वर झा धर्माचार्य तांत्रिक द्वारा सवेत पंडित श्री जय ना� झा ज्योतिषाचार्य कुटी स्थापित कयलनि जे श्री श्री 108 गौरीशंकर नाथधाम स्थान (देवसरा) कहाबैत छैक। धर्मानुरागी-यात्रीक गरमी मे स्वर्गीय मथरा राउत मधुबनी दाताक बिजली पंखा उपलब्ध छैक। एकादश रुद्र तीर्थ स्थल अत्र मे शुमार ए गेल छैक। चौक कर लग मुख्य दर्शनमे पापनाशनाय पैघघंटा लागल दृष्टिगोचर हएल। दहिन हाथ सँ बसहा आ बामकात सँ शेर पाथर कर बनल छैक जे बड़ मनमोहक दृश्य उपस्थित कर अछि। एहि सिंहद्वारक बगलमे आध्यात्म, चिंतन-पूजन विशाल हवन बीच सरोवर कर प्रवेश मध्यमे त्रिशुल प्रतीक सहज दर्शनार्थी के आकर्षित करैत या। एहि गामक दक्षिणवारि टोल मे बूढ़ी माय स्थान 700 बरस पुरान छैक, मंदिर पुनर्निर्माण काज हएलैक। दुर्गाजी दर्शन लेल परोपट्टाक लोक एतय आबि आशीष मांगैत देखाइछ। 200 वर्ष सँ पुरानी टोल मे दुर्गा पूजा दरबंगा महाराजा कालसँ होइत अबैत छैक। पश्चिम टोल मे दुर्गा जीक पूजा प्रधान छैक, एतय खेल-तमाशा नहिं लागैत छैक। एहिक लग सटल पुरान मंदिर 300 वर्षक छै जे 11 लाख टाका लागत सँ टोलवैयाक आर्थिक मदैत सँ काज सुसम्पन्न हएलैक। एतुका पाखरिक गाछ यात्री लेल आश्रय स्थल रूप विख्यात हएल छैक। एहि मंदिरक करकब उत्तर हाथ माँ काली (श्यामा माय) मंदिर आ पैघ पाखैर छैक, तकर पछबरिया मुहानमे महारानी काम सुंदरी के नाम सँ उत्क्रमित मध्य विद्यालय चलैत छैक। महान पर शानदार

घाट आ (गोल चवूग्ना आजादी पूर्वहिक वनल छैक; जल चवूग्नाक निर्माध काज ग्त्कालीन महानाजा कामश्वन सिंह दासन वियाह एगाय कलनि अपन मनमर्जी सँ एक गनीवक वटी साँ दूनक तीहक उत्कृष्टता आ गुमिक नमधीय वनवाक यनम उद्देश्य मं कन नहथि। एहि स्थानक नाज नगन सँ जातिकए विस्तृत अध्ययन कनवाक ख(गोट वृसा॰॰छ। एहि गामक नयायिक संदर्भ: चर्चा दासन खय कनव। एहि ग्रामक स्वनाम धन्य स्वर्गीय हनिनंदन कामग जी कालकाग मं खैटि 3 कट्ठा जमीन मधूवनी लहनियागंज वाधम उपार्जन कलथि ज 1976॰॰ी�अखिल रानग कैवर्ग कल्याध समिति क छात्रानास लल संपूर्ध नकवा दान-यत्र दस्गावज वनाक दैग अति यिछड़ल समाज क छात्र (कवट) क यहिल वन मधूवनी जिला मुख्यालय मं उपलब्ध कलनि, एहि छात्रानासक निर्माध 3 कमना 1980 मं रुल, जि(र्धोद्धान लल कगका माननीय नाजनगाक ऐच्छिक काषक सहयाग रुटैग नहलैक। हुन दासना दाग किया एहन अनदानक लल एहि गामम आगू आवि स्वर्गीय कामग जीक सहवन वनि अपन नाम जगजियान कनथि स आब ज(गैगसन रु' नहल हुन। एहि गामक अपन पैतृक एल�एन� मा सन नियुक्ति कहैग छथिन, आ स 5 टा आ॰॰ी�ए�एस�-अ॰॰ी�यी�एस� आफिसन एगुका वटा वनलाह । श्री विनाद कुमान विहान नाज्य प्रशासनिक सना सहा एहि0ामक नहवासी थिकाह। एहि गामक माँटिक हम चंदन वंदन आदान अभिनंदन कनैग छी।

ग

सव कनैग छैक प्रधाम्

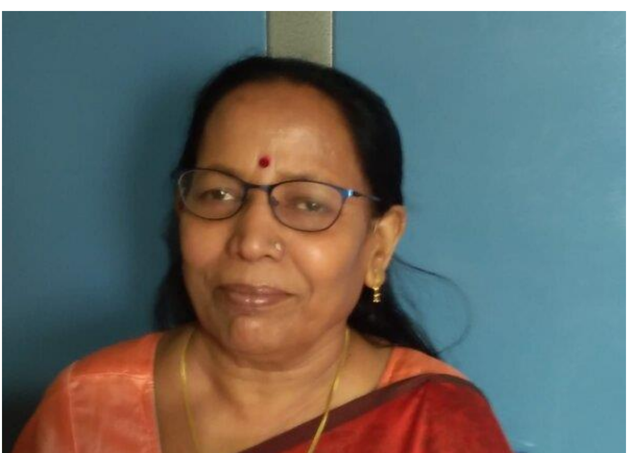
स्वतंत्रताक अमर सेनानी स्व�अनन्त लाल कामत जीक पुण्य स्मरण होइते एकटा चित्र मानस पटल पर अबैत अछि। स्वाधिनताक गाँधी सन मुखाकृतिक आस आ माटगर रंगहीन खादीक कमीज-धोती आ बगमे पहिरने चमरखानी गमछा काढ़ने सहज एक माहुआ जी सँ गढ़वा गाममे पहिलबेर भेंट कएने छी; ओ नाम-परिचय जनलाह आ पुछैत बजलाह कतकय पढ़ैत छी बाउ। हमरा मुँहसँ ई शब्द बहरायल ओ फेर प्रश्न कएलनि पीजी� टीआरटी� कएने तेना पाहुन जगदीश कामत जीक संग कतय बौआ पढ़ना रहल छी। हमर उत्तर सुनि ई ओहुसँ घर बैसल पत्राचार कोर्स क' रहलहुँ अछि आ परीक्षाफल तीन बरखक अनसन हल गेलैक अछि स मुजफ्फरपुर त�� अम्बेडकर युनिवर्सिटीक लापरवाही सँ ओ परीक्षा देलहुँ। ओ आजादीक संग्रामक आ रचनात्मक कार्यक्रमक संग-संग जातीय महासभाक काजक चर्च कएने रहथि निरन्तर होइत रहल करय लगलाह....। हुनक प्रश्नाक नान सँ रसियाइत ओ समाज समाधान सँ आखिर कहिया धरि करबाह लागत.......। हुनका बारे म स्व� राम नारायण मण्डल जीक फर्क रहलनि ई दु अध्याय मेँ आजादीसँ पूर्व आ बादक समय काल खण्ड म कार्यक लेखा जोखा होइत। प्रख्यात समाजवादी चिन्तक, विचारक, निरपेक्ष, समाजसेवी, शिक्षाप्रेमी, भारत सरकार,द्वारा ताम्रपत्रसँ सम्मानित स्वतंत्रता सेनानी बाबू अनन्त लाल कामत जीक जन्म श्री स्व� हरिनंदन कामत एवं श्रीमती खजनी देवी जीक घर 109 वर्ष पूर्व 19 जनवरी कँ घाघनतीहा प्रखंडक गढ़वा गाममे अति पिछड़ा वर्ग कमार जातिमे भेल रहनि। हुनकर बाल विवाह सूर्यकला देवीक संग भेलनि ,जाहि सँ चारि

पुत्र एक पुत्री रहलनि। ओ सनातन हिन्दू धर्मक मानैत नैष्ठिक छलाह। कवट समाज अपन इतिहास जानवाक लालसा जरूर रखैत हायत। विद्वान आ नयालक मिथिला प्रक्षेत्र मेँ लगभक एक कराेड आवादी वाला कियाट कान कर्नी आ कउट (कवट) जाति नाम सँ 1931 इ॰ मेँ ब्रिटिश हुकुमत सर्वेक्षण कयल गेलैक। गाहीमेँ निषाद - मल्लाह कँ पृथक करय संख्यावल दखायल गेलैक ज वर्तमान काल मेँ गोढी सहनी समाज कहवैत अछि। ओ जलचर आ हमसर थलचर (कृषिकार्य) करय अलग-अलग शादी - विवाहक तत्कालिन सामाजिक संस्कृति सँ हजगज मेँ यउल छी। ओना मैथिली पंजी प्रथा अनुसार कुर्मी जातिक अंगक करयम कवट धानुक आ अमातक गणना रहल अछि। मुदा वास्तविकता किछु और छैक। गैट कहल छथि" नाष्ट्रकवि नयह होवाह ज देशक सुत्रा अपन जातिक इतिहासक सव प्रमुख घटनाक वानस्थनिक सम्बन्धक सन्धान यानि गेल हाअय। जिनका इहा स्पात र सकल हाय ज हुनक जातिय इतिहासम कान - कान नक्षत्र घटना घटित रहल छैक। "तकन यनिधाम की वहनलैक हन? हनक जातिक अध्यात्मिक विशेषता हाइछ , कानु संस्कृतिक वैशिष्ट्य हायछ संसार आ जीवनक दखवाक दिव्य दृष्टि हाइत अछि। ज कवि एहि दृष्टि - वाधक अभिव्यक्ति द' सकय, सयह नाष्ट्रक नाष्ट्रकवि कहवा जाकन हाइत छैक' कवट जाति मेँ आखिर नाष्ट्रकविमेँ नामीत क रहलाह अछि? जखन कि वहुत काव्य नचनाकानक किताव प्रकाशित र नहल छैक। एहि लल नाष्ट्रीय नाजधानी मेँ वृहद, विमर्शक आवश्यकता समय कान मांग छी'...आनन्द वावु आ हुनक संगी मास्टन साहव आनन्द शनण जी

अयना जागिमँ नाष्ट्रकनिक निखान यनखय सह्ग चलल छलाह । स्न� शनध जीक स्टचु वनिकै विनाजीणम सह्ग नाजस्थान सँ आवि (गल ठैक ज स्थायनाक वाट जाहेग अछि।

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.४.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खय-२१)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम. ए., जैहन- खनाजयुन,

दरभङ्गा, सासुर- गोढियारी (बलहा), वर्तमान निवास- राँची, झारखण्ड। झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभागमे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पदसँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

अग्नि शिखा (भाग- २१)

(मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण)

कथा अखन धरि:

उर्वशी आ राजा पुरूरवा अपन गृहस्थ जीवनक उपभोग करबा मे दुनियाँक सब किछु बिसरि व्यस्त भs गेल छलाह।

आब आगू:

राजा पुरूरवा आ उर्वशी विवाहित जीवन मे अपन प्रेम संबंध के प्रगाढ़ सँs प्रगाढ़तम करबा मे बड्ड व्यस्त भs गेल छलाह। राजा अपन राज्य संचालन आ प्रजा के समस्या सs दूर भs कs उर्वशी के सौंदर्य पाश मे आबद्ध भs गेल छलाह। मुदा एक कार्य हेतु ओ सतत सजग रहैत छलाथि । शेष सब किछु बिसरि गेला के उपरान्तहु उर्वशीक शर्त ओ एको क्षण नहि बिसरलथि ।ओ अपन समस्त शक्ति सँs आ सदि खन सजग रहि ममता सरेक रआ म लागल रहलाह। रल दुनू गोटे कोनो उपवन मे रहैथि अथवा

कुनु आश्रम मे!मुदा उर्वशीक दुनु ममना सदा कुनका दुनु प्राणीक संगहि रहबा म अवैत नहैत छल । नाजमहल म सदा एकटा सुइन सन सजायल कऊ म दुनु ममनाक निवासक व्यवस्था कएल गेल छल। दुनु ममनाक नऊाक लल सदिखन दु टा पहनदान ऊहि दुनु जीवक संग नहैत छल। जना आदमी संग पनछाहीं नहैत छैक,ऊहिना दुनु ममना संग दुनु पहनदान नहैत छल। ऊना पनछाहीं गs अन्हान मे आदमी सँs बिलग हs जाइत छैक,मुदा पहनदान अन्हानहु मे गयन नहैत छल ममनाक सुनऊा मे। उर्वशी सदा नाजा पुरुनवा सँs अत्यंत प्रसन्न छलीह। नाजा पुरुनवाक संगति मे प्रसन्नता एवं चंचलता जना कुनकन अनिराम्य सखि बनल छल, ज सदिखन कुनका संगहि नहैत छल। कखना काल कुनकन चंचलता नाजा कँ सदा पनशान कनैत छलनि, जाहि कानणेँ ऊा पनशान हs जाइत छलाह। आ उर्वशी सs पिता जाइत छलाह,मुदा आपसी मगऊा मात्र उनका सबहक मध्य मधुन गकनान छलन्हि। कुनका दुनु क मध्य होइही बला गकनान कहिया कलह क रूप नहि ललक। ऊना गs पति-पत्नीक मध्य होइही बला गकनान क एक अलग आनंद होइत छैक। जाहि घनम जँ काना नाक-मांक अथवा गकनान नहि होइत छैक गखन ऊा कहन घन अछि। ईही नाक-मांक अथवा गकनान वैवाहिक जीवन क सुखक एकटा महत्वपूर्ण अंग थिक। नानीक चंचल व्यवहानक कानणेँ नाजा मे चंचलता आ चपलता सन गुण बहुत तीव्र गति सँs विकसित हs नहल छल,सदिखन शान्त आ गंभीन नहइही बला नाजा उर्वशीक सान्निध्य म एहन चंचलता आ चपलता दखबैत छलाह ज दखि कतका बन उर्वशी सदा आश्चर्यचकित

भऽ जाइत छलीह आ हुनका सामाँ म ओ अपन पराजय स्वीकार कऽ लैत छलथि | एक दिन दुनू दंपति प्राकृतिक रूप सँ बनल एक सुन्दर झील लग बैसल प्रकृति कँ मनोरम दृश्यावलि देखि आनंद लऽ रहल छलथि। राजा एहि दृश्य म बसी डुबि गेल छलाह। एम्हर उर्वशी धीरे-धीरे उठि गेलथि आ हुनक दृष्टि सँ बचैत चुपचाप एकटा गाछक पाछू नुका गेलीह। पुनः ओ धीरे-धीरे जा कए ओहि वृक्ष कात तानिसँ झुलि गेलीह। आ फेर धीरे-धीरे एहि शाख सऽ ओहि शाख पर चढ़ैत ओकर पात सभक बीच नुका कऽ बैसि गेलीह। अचक्के राजा किछु पुछलथि उर्वशी सऽ,जखन प्रत्युत्तर नहि भेटलन्हि,राजा घुमलथि उर्वशी क दिशा मं,ओ विचलित भऽ गेलथि हुनकर स्थान रिक्त देखि। आश्चर्यचकित भऽ ओ एम्हर-ओम्हर अपन दृष्टि घुमावय लगलाह । ओ व्याकुल भय सब दिशा म एम्हर-ओम्हर तकलनि,अपन दृष्टि घुमा-घुमा कऽ उर्वशी क तलाश कलथि,मुदा कतहु नहि भेटलन्हि सुन्दर प्रिया उर्वशी। आब राजा अधीर भयभीत भऽ गेलाह आ उर्वशी कँ तीव्र आवाज मं बजावय लगलाह,मुदा उर्वशी नहि एलीह। राजा हुनका नहि भेटला पर चिंतित भ गेल छलाह। मुदा ओ आगय सँ उठि कऽ कतहु दूर चलि कऽ हुनकर तलाश म एम्हर-ओम्हर सेहो नहि जा सकैत छलाह,कारण हुनकर दुनू ममता क ओहि वियावान मं छोडि कतहु गेनाइ संभव नहि छलनि। एहन स्थिति म हुनकर कुंठा आ तामस बढ़ि रहल छलनि। ओहि कुंठा मं ओ "उर्वशी....उर्वशी....उर्वशी...."आवाज देलथि। ओ जोर-जोर सँ आवाज दऽ रहल छलथि आ अपन दृष्टि दूर-दूर धरि पसारि ताकि रहल छलथि उर्वशी कँ। झील क चारू कात आ

ओहि पार अपन दृष्टि क सीमा तक देखबाक प्रयास कऽ रहल छलथि। उर्वशी कें नहि देखला पर अत्यंत दुखी भऽ कऽओ घबरा कऽ ऊँच दूर तक हुनका देखबा हेतु जखन व्यग्र भेल छलथि,तखनहि ऊपर गाछ पर सँ उर्वशी "धम्म" कऽ आवाज करैत नीचाँ धरती पर कूदि कऽ पुनः राजाक काँध पर बैसि गेलीह। राजाक घबराएल मुखमंडल देखि उर्वशी ठठा कऽ हँसय लगलीह। उर्वशीक ई शरारती चंचल व्यवहार देखि राजाक क्रोध ओहि ठाम समाप्त भऽ गेलनि,आ ओहो हँसय लगलाह। राजा उर्वशीक संगति मे नहि कम चंचल आ शरारती नहि रहलाह। हुनक चंचल शरारती मोन मे उर्वशीक एहि शरारत कें ओहिना बड़ी छोटी शरारत सँ प्रतिउत्तर देबाक विचार उठलनि। एहि लेल ओ एकटा खेलनाक खेल करबाक विचार कयलथि ।जखन उर्वशी ममता सखिक संग खेलाइत-खेलाइत ओकरा दूनू क दुलार करबा मे व्यस्त छली,ओहि काल राजा चुपचाप गहींर झील मे घुसि गेलथि आ झील मे दूर धरि हेलबाक नाटक करय लगलथि। करि आगू बढ़लाक बाद,डुबबाक नाटक करैत,जोर सँ करुण स्वर मे पुकारि लगलथि - "उर्वशी!हमरा बचाउ!हमरा बचाउ!उर्वशी! हम डुबि रहल छी!"हम डुबि रहल छी! यद्यपि हुनका सं गप्प करैत काल उर्वशी क ज्ञात भेल छलनि जे हुनका हेलब नहिं अबैत छनि,तथापि लेल उर्वशी क लागल जे राजा डुबि रहल छथि, ताहि लेल ओ एक जोर सं चिचिया रहल छथि। उर्वशी सँ सहायता माँगि रहल छथि। ई सोचि ओ पलक झपकैत झील लग आबि गेलीह।ओ राजा क बचाबय लेल आयल छलीह,मुदा ओतय हुनका राजा क निर्जीव सन भेल शरीर धीर-

धीरे एकटा वृक्ष क पाछू पानि मे डूबैत रहलनि। उर्वशी तनि गेलीह आ ओहि घबराहट मे झील मे कूदि गेलीह। आ पानि के शीघ्रता सऽ काटैत राजा के निकट पहुँचि गेली। ओ कोना तरहुँ राजा के सहारा दऽ पानि मे खींचैत किनार दिस आबए लगलीह। बड्ड कठिनाई सँऽ राजाक संग झीलक कात मे पहुँचि सकली उर्वशी! राजाक शरीर झीलक कछार पर पहुँचला उपरान्त उर्वशी हुनक नाड़ी आ साँसक परीक्षण कलथि। नाड़ी तऽ धीरे-धीरे चलैत छल मुदा साँस नहि चलि रहल छल। ई तऽ मृत्युक संकेत स्पष्ट रूपेँ देखबा मे आबि रहल छल। शोक-संतप्त उर्वशी आँखि मे नोर लऽ कऽ कानए लगलीह। ओ कानि रहल छलीह, आ आर्द्र स्वर मे किछु -किछु बाजि रहल छलीह ।- "ओह प्रिय आब हम कोना के रहब ! आब हमर के सहाय होयत !हमरा छोड़ि कतए चलि गेलौं !आब हम ककर स्पर्श अहि धरती पर रहब!" एहन तरहक विरहिन बात कहैत उर्वशी बिलखि-बिलखि कऽ कानि रहल छलीह,आ दुनू आँखि सँऽ दहो-बहो नोर बहरा रहल छलीह। एतए हुनकर सहायता करए वास्ते किनको आबए के कोनो संभावना नहि छल। एहि जन-शून्य वन क्षेत्र मे हुनकर सहायता करए लेल किया कोना कऽ अबैत। ओ सब किनको बिना जानकारी देने अएह आयल छलथि। तखन एहना स्थिति मे रक्षक के हुअतथि! कोनो आस देमय वला नहि छलनि। दुःख सऽ कातर उर्वशी अपना के निःसहाय अनुभव करैत एहन स्थिति मे कष्टदायक करुण स्वर मे विलाप करैत रहलीह। हुनकर ममता सहज ओतय आबि गेल छल आ प्रेमपूर्वक राजाक देह पर चुम्बन लऽ रहल छल। ई देखि उर्वशी

अपना क असहाय बुझि ममता क अपन प्रियजन मानैत आन करुण स्वर मे विलाप करs लगलीह। किछु काल धरि ओहि तरहें विह्वल भय विलाप कएलाक बाद ओ उठि कs ठाढ़ होइत कहलथि - "ठीक छै प्रिय,अहाँ हमरा छोड़ि कs चलि गेलहुँ! आब हमहुँ जीवs नहि चाहैत छी। हमहुँ आब आत्महत्या कs लेब।" ई कहि ओहो झील मे डूबि गेलीह, आगू बढ़बा सँ पहिने एक बेर हुन पुरुरवा लग आबि राजाक कपार पर चुम्बन लs कs कानय लगलीह। राजाक एक-एक अंग कँ चुम्बन लैत कानैत रहलीह। किछु क्षणक बाद पुरुरवाक आँखि फरकs लागल छल। किछु काल धरि आँखि धीरे-धीरे खुजैत बंद होइत रहल ... आ हुनक दुनू आँखि खुजि गेल। उर्वशी आनन्दल आँखि सँ अश्रुसिक्त स्वर मे बजलीह - . "आब अहाँक कहल मान अछि प्रिय!" राजा पुरुरवा तीव्र स्वर सँ ठहक्का लगबैत हँसैत बजलाह - "हमरा!हमरा तs किछु नहि भेल अछि!तखन हमर हालत के बारे मे किएक पुछैत छी?" उर्वशी � "लेकिन अहाँक ओ स्थिति जे अखनि किछु क्षण पहिल धरि छल! अहाँक श्वास बन्द छल!" राजा ठठा कs हँसैत बजलाह � "अच्छा!ओ! ओ तs प्रतिउत्तर छल अहाँक ठिठोली का। हम तs एक पहर तक श्वास रोकि कs नहि सकैत छी।" उर्वशी ओहि बात पर तमसा गेलीह। ओ बजलीह - "की ओहि तरहक हँसी ठिठोली करबाक चाही?कनेक आओर हम नहि सुनने रही एहन दिल्लगी होइत छैक,एहन सन बात अहाँ कतए सिखलहुँ ? अहाँ हमरा सँs एहन भयानक हँसी किएक कलहुँ!अहाँक हालत देखि हम मनs जाइत रही। हमरा एहन हँसी-दिल्लगी नीक नहि लगैत

अछि,तेँ फेर कहियो अहाँ सँ हम गप्प नहि करब।" ई कहि उर्वशी तमसा कऽ आगू बढ़य लगलीह। राजा दुनू ममता कँ पकड़ैत हुनका पाछाँ-पाछाँ बिदा भेलाह। राजा पुरूरवा एवं उर्वशी दुनू मौन धारण कएने रस्ता पर बढ़ल जा रहल रहथि। दुनू मे सऽ कियो मौन भंग करबाक प्रयास नहि कऽ रहल छलथि। किछु कालधरि अहिना चलला क बाद राजा क नहि रहल गेलनि। ओ रूसल प्रिया क बौंसबाक प्रयास प्रारंभ कयलथि,भाँति-भाँति क बार्ता एवं क्रियाकलाप क द्वारा। लेकिन उर्वशी मौन रहली। तखन राजा अनेक प्रकार क बार्ता एवं चुहलबाजी करैत फेर हुनकर चुप्पी तोड़बाक प्रयास कयलनि, मुदा उर्वशी पर कोनहु असर नहि पड़ल। किछु काल उपरान्त राजा उर्वशी सँऽ हुनकर कोमलता क विषय मे चर्चा करऽ लागलाह। अहि बेर ओ अपन प्रयास मे सफल भेलथि उर्वशी क मौन तोड़ि देलथि। ओ कहलथि - "अहाँक कोमल पैर एहि बन प्राँतक कठोरता नहि सहत। अहाँ आराम करू,हम अहाँ कँ अपन कान्ह पर लऽ जायब।" ई कहि राजा उर्वशी कँ उठा कऽ कान्ह पर बैसा लेलथि । उर्वशी उछलि कऽ हुनकर कान्ह पर सँ उतरि गेली आ फेर सँऽ अपन पैर जमीन पर पटकैत आगू बढ़ऽ लगलीह। आब राजा पुरूरवा फेर बजलाह - "अहाँ एतेक नहि तमसाउ!हमरा सऽ रूसू नहि प्रिय! आबहु मान समाप्त करू,नहि तऽ हम जीवित नहि बचब! हमरा संग पहिल सन प्रेम करू प्रिय ,नहि तऽ सच मे अहाँक ई प्रेम-पियासु मरि जायत।" उर्वशी घूमि क' देखलथि । पुरूरवाक आँखि मे नोर भरि गेल छलैक। ओ अपना क नहि रोकि सकलथि आ पुरूरवा कँ अपन आलिंगन मे

लs ललथि । ऊ रानावेश में कागका वन यूकनवाक बऊस्थल यन चूम्बन ललथि। रुन ऊ यूकनवाक बऊस्थल में अयन वरुना कँ सटन दूनका आलिंगनवद्ध कऽन नरुलीरु। किछु काल क वाद ऊ अयन मूख उठा। यूकनवा क आँखि मं दखेग वजलीरु - "अरुाँ सदिखन मनय क वाग किछक कनेग छी। रुमना ओही वाग कनिका यसिन्न नहि अछि। अरुाँ सदिखन मनय-जीवय क गय्य नहि कन। ओही वाग रुमना वक्न्ग रुनान कनेग अछि प्रिय! रुमना वचन दिय,आव अरुाँ छरुन गय्य नहि कनव।" नाजा यूकनवा दूनकन मस्क क प्रगाढ चूंवन ललथि। उर्वशी दूनकन बऊस्थल मं रुन अयन मूख नूका ललथि। किछु समयक वाद दूनकन छागी सँs मूख उठा। कs दूनकन आँखि म गकेग वजलीरु - "रुमअरुाँ यन काना गमसाछव!नहि प्रिय,रुम अरुाँ यन गमसाछल नहि छलहुँ,न रुम अरुाँ सs रूसल छलहुँ!नहि प्रियगम,ओही रुमन मात्र अरिनय छल।" दूनूक वीचक सरटा गामस आ मान समाप्त रुs गेल,गखन दूनू गोटे ऊगाहि छकटा गाछक छाँरु मं वैसि प्रमालाय म मगन रुs गेलथि ।

क्रमशः

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाऊ।

२.७.नन्द विलास राय-घसनिहिनी



नन्द विलास राय

घसवहिनी

छजना-मधौना नानीगढ़ी पनीसँ पूब सड़कक कातमे एकटा बड़ समरटगन कदमक गाछ अछि। वैशाख मासक रानका उखनाहा। दिनक दस बजैत। टहटहौआ रौद। एकटा बीस-बाइस वर्खक घसवहिनी ओइ कदमक गाछ तर बैसल छली। घसवहिनी बड़ सुन्नरि छली। गोर वर्ण, छड़हरा शरीर, गोल आ सुडौल मुँह, नमहर-नमहर आँखि कश। कारी-कारी आ घेघ-घेघ दुनू आँखि। समगालाक हाड़ासन ठोर। युआ जकाँ फूलल-फूलल आ सब सन लाल-लाल गाल।

चारिटा कौलेजिया लड़का साइकिलसँ ओइ सड़कसँ जा रहल छल। जखन कदमक गाछसँ एक लग्गा पाछू रहए तँ ओइमे सँ एकटा कौलेजिया लड़काक नजैर ओइ घसवहिनीपर पड़ल। कौलेजिया लड़का तँ कौलेजिये लड़का रहइए। बसी लहूआ आ उन्नूखल। ओ लड़का जकर नजैर घसवहिनीपर पड़ल रहए, बाजल-

�नौ राय, कनी अपना सर ऐ गाछतर जिना ला।�

गाबगम दासन, गसन आ चारिमा लड़काक नजैर घसवहिनीपर पड़ल। दासन लड़का बाजल-

�हँ, हँ, बड़ रौद छै, कनी गाछतर ठढा ला।�

चारू लड़का अपन-अपन साइकिल खड़ा कलक आ कदमक गाछतर आबि बैस गेल। गसन लड़का घसवहिनी दिस ताकैत बाजल- �मारु बूटीफूल गर्ल।�

गैयन घसवहिनी बजली-

�नइ यौ विद्यार्थी द मारु बूटीफूल गर्ल।�

चानिम ल७का रूसरूसा कऽ वाजल-

�स्याग वहिं घसनहिनी वस पढ़ल-लिखल वूझाइ छौ।�

चान्ह ल७का साइकिलपन चढ़ल आ विदा रऽ गेल। ल७का सरकँ जाइत देखि घसनहिनी मूस्किया लगली।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.प्रमाद झा 'गोकुल'- हमन कि डाकन? (वीहनि कथा)



प्रमाद मा 'गाकुल'

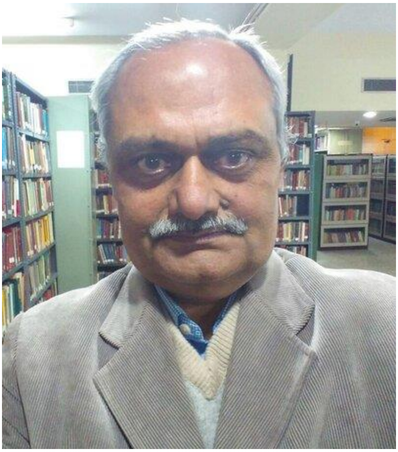
रूमन कि ङाकन? (वीरुन कथा(

गीन मरुीनास विन अन्न यानिक दरु काँट काँट आ कनेंग कनेंग आँखि रुलिक अल्लु सन रै गेलौ नाना दुनु गाटक गे माय ! चल ३0,लागि ङा यरुनिरुं जकाँ अयन दिन दुनियाँम आ रुँ ! ,गहुँ रुो वावु गारुन !! घंट ३0क आ सीना गानिक नरुरु ! वटीक ञञा नें गेलरु ।ञञा गेलेङाञ्ञ नलाक्षानीक ज रुमना संग दिश्वानिस वलाक्षान कलक। सरु आन काञ्ञ नें ,जकना कैल गक रुम चवाजी करु छलिये स।
गाना आनरुक विंा रुाञ्ञ छरु ज रुमन माठम सिंदुन क रुना ? ग सुनि लै जाञ्ञ जारु रुमन माठ सव दिन अरुना दय दय - नरुग। रुमन काखिम वलजानी ज वीज छिटलक स यलि नरुल अछि। ङाकना रुम जन्म रुवे।ङा जरुया रुमनासँ युछग ज रुमन वाय क ? रुम ङाकना दखा आ वुसा रुवे ज गारुन वाय रु गामक नामी गिनामी सवस येघ लाक रुल्लाँ वावुक वटा रुल्लाँ छियो।गखन ककन ञञाग जगे ? रुमन कि ङाकन ?? वटीक वाग सुनि दुनु यनानी अवाक रै गेल।

-प्रमाद मा 'गाकुल', दीय,मधूवनी (निरुान)

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन य0ाङ।**

२.१.नवीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि गेल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक



<u>रवीन्द्र नारायण मिश्र</u>

बदलि गेल अछि सभकिछु (उपन्यास)- धारावाहिक

<u>खण्ड ३१ सँ अन्त धरि</u>

बदलि गेल अछि सभकिछु

31

नानी निकेतन कांडक कोर्टमे फैसला आबक छलैक। साल बितिसँ बरीसँ ई मामिला चलि रहल छल। कतेको गोटेक गवाही लेल गेल। साक्ष्यसभ नताशी आ डाक्टर कुमारक संलिप्तता साबित करबामे बहुत सहायक भेलैक। स्थानीय लोकसभ सेहो बहुत मदति कयलखिन। नानी निकेतनमे पाओल गेल दस्तावेजसभ सेहो मामिलाकेँ मजगूत कयलक। जज साहेब एहि बातसँ बहुत क्षुब्ध छलथि जे सरकार एहि मामिलाकेँ झँपबाक कोनो प्रयास बाँकी नहि रखलक। जज साहेबकेँ व्यक्तिगत रूपसँ प्रभावित करबाक प्रयास सेहो कएल गेल। हुनका बदमाससभ डराबक प्रयास सेहो कयलक। मुदा जज साहेब डरल नहि गेलाह। अंततः फैसला आएल। नताशी समेत हुनकर तमाम संगीसभकेँ आजन्म कारावासक दंड देल गेल। अफसोसक बात जे संदीप सेहो फँसि गेल। डाक्टर संलिप्ततामे बहुत रास सबूत नताशीक आदमी कोर्टकेँ उपलब्ध करबा देने छलैक। डाक्टर सभक प्रयास छलैक जे संदीपक नाम आगू कयलासँ आओर लोकसभकेँ बँचाओल जाए। मुदा से नहि भेलैक। मुदा संदीपा

नहि बाँचि सकल। असलम आ बच्चा दिन धरि ओहिसभ लागल रहए। जाबे हास अएलैक गाम बच्चा रुनी भए गेल रहैक। जखन मामिला सीबीआईक हाथम अएलैक तखनहु हमसभ प्रयास करैत रही जे संदीपकेँ सरकारी गवाह बना देल जाए। मुदा से भेल नहि। आखिर ओहि मामिलाम न्याय भेल। न्याय ओतेक भेल जे सरकारकेँ हिला कए राखि देलक। दर्जन भरि सलाहकार सहित नेताजीक संग ओहि मामिलाम आजन्म कारावाससँ दंडित भेलाह। असलम ओ मामिला भएओ गेल छल भयानक। नारी निकेतनक लगपासम कतेको नरकंकाल भेटल छल। कतेको लापता महिलासभक हड्डी ओहिम भेटल जकरा डीएनए जाँचसँ पहिचान कएल गेल। करबाक मान जे आहान अपराधक संग-संग हत्याक जघन्य अपराध सहित भेल छल। पनिशमेन्ट सामने छल। फैसला सुनबाक बाद जज साहेब कहलनि जे ओ फैसला अखन अपूर्ण अछि कारण बच्चा चार अपराधी अखनहु कानूनक सामने नहि आनल जा सकल अछि। तेँ मामिला बंद नहि कएल जा सकत,अपितु चलिते रहत। एक-एकटा दोषीकेँ दंड देलाक बाद ओ मामिला बंद कएल जा सकत। जज साहेबक उपराकिसँ कोर्टम उपस्थित नेताजीक समर्थकसभ तीतरसँ हिलि गेलाह। सभक चेहरा फिक्की पड़ि गेल छल। आब की हाएत? के बाँचत,के जहल जाएत तकर कोन ठेकान? नारी निकेतन कांडक फैसला कोर्ट ओहन समयम कएलक जखन चुनाउ माथपर छलैक। शासनक प्रमुख-प्रमुख आदमीकेँ जहल चलि गेलाक बाद महिमाक हाथ-पैर फूलि गेल छलनि। हुनका राजनीतिक कारा अनुकूल नहि रहलनि। नेताजी जबरदस्ती हुनका आगू कए देन

रहथि जाहिसँ कुर्सीसँ हटि गेलाक बाद असली शक्ति हुनक हाथमे रहनि। मुदा नेताजी सभा सभ प्रमुख आदमीसभ जहल पहुँचि गेलाह। पार्टीयक असामाजिक तत्वसभक कब्जा भए गेल । एकर बाद ई सभ आयसम बैसाय कहलक।

"ई समय हमरासभक लेल स्वर्ण काल अछि । महिमाकेँ आगू रखने रही आ सभटा शक्ति हमरासभ लग रहत। पहिनहुँसँ बेसी नीकसँ अपन सभक कारोबार चलैत रहत ।"

"मुदा हमसभ चुनाओ कोना जिति सकब?"

"महिमाकेँ के जनैत छैक?"

"चुनाओ टाकासँ लड़ल जाइत छैक । जातिक नामपर लड़ल जाइत छैक । धर्मक नामपर एकमुश्त भोट पड़ैत अछि, आगू सभ पड़त । बस लोककेँ जगेबाक छैक । एकरबाद देखबैक की हाल रहैत छैक।"

"से कोना हएत ।"

"हैक ने। दु-चारिठाम दंगा करबा देल जैक। कोर्टसँ आरक्षणक खिलाफ फैसला करबा देल जैक। गरीब जनतासभकेँ टाकाक बल कीनि लेल जाएत । झकझक लोक प्रदर्शन करत । मीडियामे अपन लोकसभ छथिहे । ई सभ कहिआ काज अओताह? टाकामे बड़का शक्ति छैक । जेकर काज हैक लगा देल जैक । एक लगाउ,दस पाउ । फेर जखन अपन सरकार बनि जाएत,सभ सुदि-मुरक संग उसूल भए जाएत । कोना चिंताक बात नहि ।"

"एहिमे बड़का खतरा बूझा रहल अछि । जँ हमरसभक योजना सफल नहि भेल तखन?"

"खाना कथीम नहि छैक? ओाक ढना कओ जिनगी नहि चलि सकैग अछि । हमना लाकनिक धंधाम गँ ऽऽी सए चलिग नहल अछि। आगुडा वलग ।"

"ठीक छैक । हमसए सओह कनी ।"

ओहि गनहं निवान-निमर्णक वाद डा सए महिमा लग यहुँचलाह । डा ओकनासएकँ दखिाहि गामस लाल एओ गेलीह।

"गानासएकँ ओहिठाम विना सूचनाकँ अओवाक प्रयाजन?"

"हमसए सएदिनसँ अहाँक यनिवानक शुएचिंाक नहलहुँ अछि । नगाजीक लल अहुँसँ वसी हमसए चिंगि छी। डा जकहन छुटि कओ अडागाह । गखन कानूनी प्रक्रियाम किछु समय गँ लगिग छैक । गाव हमना लाकनिकँ धैर्य नखवाक हाओग ।"

"हम ऽऽी सए नहि जानी । आव वहुग एओ गेल । हम ओहिसएम यओल नहि नहि सकैग छी । हम आऽऽओ नाक्षप्रमूखक यदसँ ऽऽस्फिहा दवओ जाओ नहल छी । अहाँ लाकनि अयन दासन नगा चूनि लव । ओहि काजम लागल नहव हमना वशक नहि अछि। हमन स्वरुाव आ यनिस्थिगि ऽऽी सए कनवाक अनूमगि नहि दओ नहल अछि।"

"अहाँ अगुाऽऽ ज्ञनि । चूनाडाक घाषणा एओ गेल अछि। नगाजी आ हुनकन सहयागीलाकनि जहलम छथि । ओहन संक्रमण कालम डँ अहुँ धैर्य नहि नाखव गखन हमसए कोना जिगव?"

"स अहाँ लाकनि जानू ।"

"मुदा अहाँकँ अयन धिआ-यूगाक चिंा गँ हाओग?"

"स की?"

"ओ सभ गाबय सुनबैत अछि... ।"
"खबरदार! जँ आगू किछु बजैत गेलहुँ तँ हमरासँ खराब कोओ नहि होएत ।"
मामिला बिगड़ैत देखि किछुगोटे आगू बढ़ि कऽ महिमाकेँ बुझबाक हेतु एकांतमे लऽ गेलथि। आखिर चूनाओ धरि महिमा नागरप्रमुखक काज करबाक हेतु तैयार भऽ गेलथि। सभगोटे निश्चिंत भऽ अपन-अपन घर वापस गेलथि।

32

सरकारक मुफ्त योजनासभसँ सरकारी खजाना खाली भऽ गेल छल। सेवानिवृत्त कर्मचारीक पेनसन दब मासकेर भऽ रहल छल। कार्यालयसभक बिजली,पानिक बिल तँ कम भेल मुदा आउर जरूरी समानसभक घोर अभाव भऽ गेल। कैकटा कार्यालयसभमे कर्मचारी/ अधिकारीक दरमाहा भेटनाइ सेहो परारब भऽ गेलनि। महगाइ गाछ बढ़ि गेल जे मोना भरि कऽ टाका लऽ गेलाक बादो एकदू सप्ताहक हेतु समानसभ नहि भेटैत छल। कहबाक मतलब जे साँस घोर अराजकता पसरि गेल छल। चूनाओक माहौलमे हालति बिगड़ि गेल। महिमा लाख प्रयास करथि जे एहि दलदलसँ बाहर होइ मुदा से होब नहि करनि।
"एहि समयमे अहाँ कोना हमरासभकेँ छोड़ि सकैत छी?"
"मुदा हमरा लगकेँ ई सभ अछि नहि। जनतामे त्राहिमाम मचल अछि। लोक परेसान अछि। धिआ-पूताक भविष्य संकटमे अछि

। एहन ठाम हम चुनाओ जँ जितित जाएब तँ कोन रहतय होएत
।"

मुदा ओकर तथाकथित समर्थकसभ नहि मानैत। पार्टीक किछु प्रमुख नेतासभ टिकट नहि भेटबाक कारण अलग गुट बना लेलक। पार्टीक हालत ओहुना नीक नहि छलैक। नारी निकेतन कांडक बाद पार्टीक प्रतिष्ठा बहुत घटि गेल छलैक। मुदा बदमाससभक घमंड कम नहि भेल रहैक। ओकरासभकेँ विश्वास रहैक जे ओ सभ जेना-तेना चुनाओ जिति लेत,सरकार रहनसँ ओकरसभक बनतैक। मुदा महिमा एहि बातसभसँ आश्वस्त नहि रहथि। ओ चुनाओ नहि लड़बाक घोषणा कए देलथि। जखनसँ पार्टीमे फूट भऽ गेल रहैक। एहिसभसँ आम कार्यकर्ताक मनोबल बहुत खसि गेलैक।

आखिर महिमा अपनाकेँ राजनीतिसँ अलग करबाक दृढ़ निश्चय कएलक आ तहि दिशामे आगू बढ़ि गेलि। हम अपन कोठरीमे शक्तिनाथक संगे गप्प करैत रही। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्यमे भविष्यक योजना बनबएमे लागल रही कि महिमाकेँ अबैत देखलहुँ।

"आउ, आउ।"

महिमा असगर रहथि। ओ बहुत परेशान बुझा रहल छलीह। हम हुनका आश्वस्त करैत छी। शक्तिनाथ चाह अनैत छथि। हमसभ चाहक संगे गप्प करैत रहैत छी।

शक्तिनाथ पुछलखिन-

"एहि असमयमे अहाँक आगमनक कारण?"

"कारण तँ बुझल होएत। सौंस नगरी मचल अछि। लोक परेशान

अछि । सरकारी तंत्रपर सभक लालच नियंत्रण अछि । ओहन परिस्थितिमे हम ओहि फसादसभमे नहि रहए चाहैत छी । ओना हमरा ओहिसभमे कहिओ रुचि रहबो नहि करए । मुदा हमरा ओहिमे फँसा देल गेल । अहाँसभकेँ तँ सभटा बूझल अछि । मुदा हम आगू ओहिमे लागल नहि रहि सकैत छी ।"

"मुदा ओहिमे अहाँकेँ रहबाक हेतु कोनो मजबूरी नहि अछि। अहाँ जखन चाही हटि सकैत छी ।"

"बात ओतेक आसान नहि छैक । हमर पार्टीपर असमाजिक तत्वक कब्जा छैक । ओ सभ हमरा धएने अछि । लाख कहैत छिऐक छोड़ए नहि रहल अछि । मुदा हम आब तय कए लेल छी। हम ओहिमे नहि रहब । हम अपन त्यागपत्र पठा देलिऐक अछि ।"

"अहाँक निर्णय सही बुझाइत अछि । हमसभ सभ तरहेँ अहाँक मदति करब ।"

"तही आशासँ हम एतए आएल छी ।"

एक मौकापर महिमाकेँ राजनीतिसँ संन्यास लेबाक घोषणासँ समग्र निकाय हलमे निराशाक माहौल बनि गेल । बहुत रास नेतासभ पहिने पार्टी छोड़ि देने रहथि । किछु आओरगोटे ओएह रस्ता धेलनि । पार्टीमे हाहाकार मचि गेल । जनतामे ओहि दलक छवि ओहुना खराब भए गेल छल । बदमाससभक कोनो प्रयास सफल नहि भए रहल छलैक । जाहि देखू,ओतहि शिखाक जयगान भए रहल छल । शिखाक बैसारमे लाखक हुजुम जमा भए जाइत छल । हम आ शक्तिनाथ दिन-राति शिखाकेँ संगे गाम-गाम घूमि रहल

छलहुँ। शिक्षाकेँ न भूख लागनि,न प्यास। अर्जुन जकाँ लक्ष्यक अतिरिक्त किछु नहि सूझा रहल छलनि।

"जाबे एहि दुष्टसभकेँ कुर्सीसँ हटा नहि देब ताबे चैन नहि लेब।" ई बस एतबे बजैत छलि।

जनतामे जेना क्रान्ति आबि गेल छल। लोक स्वेच्छासँ दिन-राति शिक्षाक समर्थनमे काज करैत छल। गाम-गाम प्रचार करैत छल। मतदातासभसँ संपर्क करैत छल। शिक्षाक समर्थनमे माहौल बनैत देखि विरोधी सभकेँ खास कए बदमास सभकेँ सीटीपीटी गुम्म भेलैक। हालात काबूसँ बाहर जाइत देखि समग्र विकास दलक लोकसभ चुनाओ स्थगित करबाक प्रयास करए लागल।

"देशक परिस्थिति चुनाओक हेतु उपयुक्त नहि अछि। पहिने हालति ठीक होअए देबाक चाही तखनहि चुनाओ करबाक हेतु आगू बढ़ल जाए।"

ताहि उद्देश्यसँ ई सभ चुनाओ आयोग पहुँचल। मुदा चुनाओ आयोग अड़ि गेल।

"एहना कहीं होइक अछि। चुनाओक घोषणा भए चुकल अछि। चुनाओ समयपर होएत। सभकेँ एही दिशामे काज करबाक चाही।"

चुनाओ आयोगक एहि घोषणासँ बदमाससभकेँ बड्ड निराशा भेलैक। मुदा करितए की सकैत छल?

33

समग्र विकास दलक तमाम विरोधक अछैत जनता जनार्दन शिक्षाक

समर्थनमे एकजुट भऽ गेल छल। जाहि कारणे ओकर कार्यक्रम चलैत छल,लोकसभक मेला लागि जाइत छल। लोक शिखाकेँ सुनिते नहि छल,अपितु किछु टाकाक योगदान सेहो करैत जाइत छल। एहि तरहेँ प्रचूरमात्रामे धन जमा भऽ गेल जे चुनावक लेल तँ पर्याप्त तँ छलहे , तकर बादो बहुत बाँचि जेबाक संभावना छलहे । शक्तिनाथ एक-एक पाइक हिसाब रखैत छलाह। संगहि अगिला कार्यक्रमक योजनाकेँ अन्तिम रूप देबाक काज ओएह देखैत छलाह । जौँ जौँ चुनाव लगीच अबैत गेल,शक्ति स्पष्ट होइत गेल जे विजय तँ जनक्रान्तिदलक होएत। जखन ओ [illegible] जनताक समक्ष उपस्थित होइतथि तँ बिना किछु कहनहि जनताक ओकरा प्रति सहानुभूति भऽ जाइत छलैक। सभ पुछैत-
"एना किएक? बात की छैक? कोन एहन घटना भेल जे हिनका शक्ति रूप धारण करए पड़लनि।"
लोकसभ आपसमे चर्च करैत। एहि तरहेँ शिखा संग घटित घटनासभ कोन-कोन यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रचारित होइत रहैत। शिखाक जादू जनतापर काज कऽ रहल छलैक। लोकसभ ओकरा अपन आदर्श मानि लेने छल। ओकरा हेतु किछु करबाक हेतु तैयार छल।
एहन प्रबल जन समर्थन आखिर चुनावक परिणाममे प्रदर्शित भेल । तीन सएमे सँ दू सए पंचानबेटा जन प्रतिनिधि जनक्रान्ति दलक जीति गेल। ओकर अतिरिक्त पाँचटा निर्दलीय चुनाव जीतलाह । ओहोसभ मूलतः जनक्रान्ति दलक छलाह। मुदा टिकट नहि भेटबाक कारणे निर्दलीय चुनाव लड़लाह आ जीति गेलाह।

समग्र निकास दलक एकदूटा उम्मीदवान चूनाउा नहि जिति सकल। यार्टीक ई हाल हाएत,स साइत कउा नहा सावन नहुल हाएत। मूदा सत्य सामन छल,तँकाक वाटयन दहाउ यानि नहुल छल। शिखा आइ गुलावी नंगक सानी यहिनन छलीह। उाहीसँ मल खाइ नंगक आउान यनिधानसर यहिनन जखन उा मंचयन अएलीह गँ लाक एक उधक हगु चकित रुए गेल। चाककागसँ हुलक नर्षा रुए नहल छल। सर आनन्दम छल। प्रायः एही उधक प्रतीउा लाक कहि न कहिआसँ कए नहल छल। लाकसर कनाल ध्वनिसँ हुनकन स्वागत कलक। सत्यक निजय रुल। लाकम वड्ग उत्साह नहैक। सरकँ उाहि उधक प्रतीउा नहैक जखन शिखा नाग्यप्रमूखक यदयन शयथ लनीह। गाहि लल कार्यनाही शुरुउा रुल। जन प्रतिनिधिसरक वैसानम हुनकन नाम नताक रूयम प्रस्तावित कएल गेल। सरगाट सर्वसम्मतिसँ हुनका नता चूनि ललनि। गकन वाद शिखा उठलथि। लाकसरक अनूमान नहैक ज उा धन्यनाद दवाक हगु आगू वढि नहल छथि। मूदा हुनकन मानम गँ किछु आउान छलनि। उा माइक अपना हाथम लन छथि। लाकसर हुनका सूनवाक हगु एकटक रुए गेल छथि। शिखा वजनाइ शुरू कएन छथि-

"वंधूगण!

एहि एतिहासिक निजयक अनसनयन अहाँलाकनिक संग निजयाभनम रुाग लए हम अतिशय अह्लादित छी। जाहि उत्साहसँ समाजक सर नर्गक लाक एहि चूनाउाम अपना लाकनिक दलक संग लागल नहल,दिन-नाति काज कएन नहल,तहिसँ निजय गँ

निश्चित लागि रहल छल। मुदा विजय एहन होएत जे विरोधी दलक खाता धरि नहि खुजि सकत तकर अनुमान साइत ककरो रहल होएत। असलमे जनताक अपार शक्ति अछि। बस ओकरा जगेबाक काज छैक। ई बात नहि छैक जे विरोधी दलक लोक सूतल रहलाह। अपितु,अपना दिसि सभ किछु कएल रहलाह। अंत-अंत धरि एहि प्रयासमे रहथि जे चुनाओ जीति जाए। मुदा समय हुनकासभक संग नहि देलक। ओ सभ एहि हालमे पहुँचि गेलाह जे हुनकर एकहुटा जन प्रतिनिधि नहि चुनल जा सकल। शिखरसँ शून्य दिस जाएब एकरे कहल जा सकैत अछि।

हमरा लोकनिकेँ एहि विजयोल्लासमे अपन कर्तव्यकेँ बिसरि नहि जेबाक अछि। अपितु,जनताक विश्वासपर सही उतरबाक अछि। ताहि हेतु जे किछु त्याग,तपस्या करब जरूरी होएत से सभगोटेकेँ करबाक अछि। तखनहि समाजमे परिवर्तन आबि सकत। सही मानेमे जनतंत्र तखनि होएत। समाजक निम्नतम पायदानपर अटकल लोकसभकेँ उठा कए ओकरासभकेँ गरिमामय जीवन-यापन करबाक व्यवस्था जाबत हमसभ नहि कए सकब ताबत ई विजय अपूर्ण अछि,अर्थहीन अछि, व्यर्थ अछि। अस्तु,हम राजनीतिसँ सन्यास लेबाक निर्णय कएलहुँ अछि। ई निर्णय कएलहुँ अछि जे कोनो राजनीतिक पद नहि लेब। अपितु, समाजक बीचमे जा कए दीन-दुखी व्यक्तिक हेतु काज करब। असल मानेमे परिवर्तन नीचाँसँ हेबाक छैक। सभकिछु सरकारेपर नहि छोड़ल जा सकैत अछि। ताहि हेतु एहन समर्पित लोकक प्रयोजन अछि जे जमीनसँ जुड़ल होथि आ बिना कोनो लोभ-लालचकेँ जन कल्याणकेँ ध्यानमे राखि

निस्वार्थ रूपसँ काज करथि । एखनहि सरकारक मदति कारगर होएत । अन्यथा टूटल तरहक यानि ओकाँ सरकारी प्रयास व्यर्थमे बहि जाएत । हमर इच्छा अछि जे नायकप्रमुखक पदक हेतु शक्तिनाथकेँ चुनल जाए । ओ बहुत दृढ़ निश्चयी आ परिश्रमीक संगहि ईमानदार लोक छथि । हम सामाजिक उत्थान किछु आओर लोकक संग काज करब । एकर मतलब ई नहि जे दोसरका सहयोग नहि करबनि । जखन जे मदति दोसरका चाही ताहि हेतु हमसभ तैयार छी आ रहब ।

एतेक बजलाक बाद शिखा आगू बढ़लीह आ शक्तिनाथकेँ मंचपर आगूक पाँतिमे लए अनलीह । फूलक मालासँ शक्तिनाथकेँ लादि देल गेलनि । हम स्वयं शिखाक समर्थन करैत शक्तिनाथकेँ नायकप्रमुखक पदक हेतु प्रस्तावित कएलहुँ । ओहिठाम उपस्थित लोकसभ करतल ध्वनिसँ एहि प्रस्तावकेँ सहर्ष समर्थन कयलनि । सर्वत्र खुशीक माहौल छल । लागि रहल छल जे एहि परिवर्तनक स्वरूप चित्र चारूभर सजल समस्त प्रकृति अपन सहमति व्यक्त कए रहल छल । एखनहि कतहुसँ उमड़ैत-घुमड़ैत मेघ सेहो आबि गेल । झीसी पड़नाइ शुरू भए गेल । लागि रहल छल जेना प्रकृति हृदयसँ एहि युगान्तकारी परिवर्तनकेँ स्वागत कए रहल छल । सभ एकस्वरसँ कहि रहल छल-

"इन्कलाब जिंदाबाद!"

"शिखा जिंदाबाद! शक्तिनाथ जिंदाबाद !"

"जनक्रान्ति दल जिंदाबाद!"

34

समाजमे भए रहल एहि तरहक सकारात्मक परिवर्तनसँ सभसँ बेसी परेशान नेतासभ छलाह। कारण आब हुनकासभक वोटबैंक खतम भए जेबाक संभावना देखा रहल छल। ओ सभ नव-नव समस्याक निर्माणकए समाजकेँ बँटबाक प्रयासमे रहैत छलाह। गाम-घरमे कोना-ने-कोना रूपमे अपन उपस्थिति बनओने रहबाक हेतु एकटा गुटक संग भए जाइथि ,भने ओ कतबा गलत किएक नहि होअए। परिणामतः बदमाससभ ढीठ भेल जा रहल छल। न्याय व्यवस्था बहुत महग आ उबाउ छल। तखन लोक जाए कतए?
एहि परिस्थितिमे शिक्षा एकटा आशाक किरण बनि कए समाजक सामनेमे उपस्थित छलीह। ओ अपना भरि प्रयासो करैत छलीह। मुदा समाजक अंतर्विरोध समस्या बनि कए सामनेमे मूखर भए जाइत छल। आब गामसभ सहरोसँ बेसी एकाकी भेल जा रहल छल। लोकसभ अपन दरबाजा धरि सिमटि कए रहि गेल छल। घर-घर टीभी,मोबाइल.पसरि गेल छल। फेसबुक,व्हाट्सअप अपन दुनिआ भरिक समाचारसँ लोक क्षण भरिमे अवगत भए जाइत छल। मुदा लग-पासमे की भए रहल छल तकर कोनो जानकारी लेबाक सुधि नहि रहि जाइत छल। निश्चय ई परिस्थिति बहुत

विकट छल ।

मुदा शिखा अपन बातपर अड़ल छलि। शिखा एकटा सही काजमे लागल छलि। जान रहए की जाए ओ अपन लक्ष्यक प्रति बिना कोनो प्रतिदानक अपनाकेँ पूर्ण समर्पित छलि। ओकरा एहि अभियानमे असगरि नहि छोड़ल जा सकैत छल। अस्तु,हम सब किछु छोड़ि हुनकर कार्यक्रमकेँ आगू करबामे लागल रहलहुँ। दिन-राति शिखाक संग दैत रहलहुँ।

जेठक दुपहरिआ होअए किंवा माघक ठाढ़,शिखा येन-केन गाम-गाम भ्रमण करैत रहलीह। ई क्रम एक दिन,दु दिन , दु मास,तीन मास नहि अपितु, वर्षक-वर्ष अनवरत बिना रुकने चलैत रहलीह। तीन वर्षक मेहनती आशासँ परिपूर्ण जखन ओ ग्रामवासी लोकनिकेँ संबोधित करथि तँ लोक भाव विह्वल भए जाइत छल। हुनकर बातकेँ अनुसरण करबाक दृढ़ संकल्प करैत छल। बात ओ कोनो पैघ कहब नहि करथि जकरा करब कठिन होइक। जेना कोनो प्रकारक निसाँ नहि करब। नेनासभसँ नोकरी नहि कराएब,अपितु ओकरा इस्कूल पठाएब। वृद्धलोकनिकेँ सादर अपन-अपन परिवारमे राखल जाएत। बिआहमे दहेज नहि लेल जाएत। बालिकाकेँ वर जकाँ शिक्षा देल जाएत। परिवारक संपत्तिमे बेटा-बेटीकेँ बराबरिक हक देल जाएत। जाति-पाँति,धार्मिक विवादसँ समाजकेँ मुक्त कएल जाएत। ई सब बात एहन छल जाहिपर कोनो तरहक प्रश्नचिह्नक प्रश्ने नहि उठि सकैत छल। मुदा ओकर कार्यान्वयनमे परेसानी जरूर छल। कारण लोक उपदेश तँ दए दैत छल ,मुदा जखन अपनापर पड़ैक तँ टारि दैत छल।

ओहि तरहें समाजमे परिवर्तनक प्रयास करैत-करैत बीस बर्खसँ बेसीए बीति गेल। हमसभ अपन सर्वस्व समाजक हेतु अर्पित कए देलहुँ। मुदा शिक्षा अखनधरि थाकलि नहि छलीह। पूर्ण आशातीत बदलल रहथि। तकर अनुकूल परिणामो देखबामे आबि रहल छल। बालिकासभ डाक्टर,इंजीनियर बनि रहल छलि। गाममे सभ जातिक लोक संगे बैसि कए खाइत छलाह,उत्सव मनबैत छलाह। धर्म,जातिक विरुद्ध समाप्त भए रहल छल। समाजमे समरसता बढि रहल छल। लोकक जेना शिक्षाक स्वप्न साकार भए रहल अछि। बदलि रहल अछि सभकिछु। समाज नूतन स्वरूप सामने प्रकट भए रहल अछि जाहिमे सभी मानव समानताक अधिकारसभकेँ सुलभ होएत। समाजमे परिवर्तनक प्रक्रियाक पूर्णताक हेतु कोनो समय सीमा नहि राखल जा सकैत अछि,इहो संभव नहि अछि। कारण सामाजिक परिवर्तन एकटा सतत चलए बला प्रक्रिया अछि। जरूरी इहो अछि जे हमसभ सकारात्मक दिशामे अपन डेग बढबैत रही ,सभी बातकेँ सहर्ष स्वीकार करी। जकर जे हक छैक से दिऐक
।

"बहुत किछु रहलैक अछि आ आगुओ रहतैक। जाधरि सभ सुखी नहि भए जाएत, समाजसँ असमानता, गरीबी, शोषण हटि नहि जाएत ताधरि रूकबाक नहि अछि।" से ओ कहैत रहैत छलीह। नित्य अपन कार्यक्रममे उद्घोषणा करैत रहैत छलीह-"चरैवेति! चरैवेति!

(समाप्त)

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अड़ेर डीह, मातृक: सिम्भुआर ग्राम, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), रेलवे मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. हसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.कुहेस थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.किशन कारीगर- वूसक्कानी दावीञ चून गें ह्मना याछ्ञ घून? (हाष्य कटाऊ)



किशन कारीगर

वूसक्कानी दावीञ चून गें ह्मना याछ्ञ घून? (हाष्य कटाऊ)

वावा वञवञाञ्ङ्ग वञलाह कहञ् १ ञहना कहीं वूसक्कानी दावी हलैञ? ञ ह्मर्हि टा वञ कावित वूसक्कान आ दासन किया १ गिछ वूसव न कर्गे हाउ ञना? ह्मर्हि टा शुद्ध लीखे छी आ महाश्यकर्माचार्य नला दावी ञ आन अशुद्ध लिखैत हगे ञकना

ब्याकनध क समय कणअ् स हों? ज एक आध टा कनि सम्मलन म चल ाेगल हाेज्ञ्ी आ कि अकादमी यूनस्कान सम्मानिण ए ाेगल हाउ ाेधाख स णव ण आना अनकन माजन नै कनै जाज्ञ् छै की?

हम वावा स यूछलहुँ ज अहाँ खनाव आ की नीक लीखै छियै स ण जनणा हैसला कनणै कीन? अहाँ क माजन नै कनै जाज्ञ्ज ण अंदू माजन नै कन्ह? एण मथायवी कैलए? वावा वजलै हो कानीगन मैथिली म अजव णाल छै सव अयन दाविए चून नहणह ज हम वउ काविल लखक, दासन ण अदन वदन लिखैए?

दर्शक याOक नणे सव एकना सवहक किणाव यढव नै कलकै आ अयनमन दावीए चून नहणह? कणक जकना साहित्यिक जानकानी नै उहा सव मिथिला मैथिली Oीकदान क अयना क लाल वूमक्कन दावीए ाेगौनव चून नहणह. जहिया यल्लिक जागि ाेगल णहिया वूमहक एकना सवहक अनकआ दावी चूनमवून एड जणै की?

यथार्थ वजहक लिखहक ण ज्ञ् किछ्र हंगयीवा गजयीवा दलाल अंधहक सव हमन णाना वावा वहटनवा, कानीगनवा कहि अवहलना कनणह? यूछवहक एना किए ण हूज्ञ्सवूक यन गलाेथाथनी कनणह? डाोह कूणकें क वूमकनी दावी दखा णाना नीचा दखवे क हिनाक म नहणह की? आव लाजा धाख छै कहां अज्ञ्ी निनलज्जा सव क?

हम बाबा के टोकलहुँ जे बउबउआह्ला नहुव की एकर समाधान हौ? बाबा हाँ हाँ क हँसैत बजलाह बूझी आब हमरा काना उन अछि की? आब हमहुँ एकरा सब लक बूझक्कनी दादीए नहुव चून आ उ सब हमरा याह्लए घून? कनौ वाकूड्वैल ग आब यल्लिक खिस्सानौ क दौ गलवज्जी म चूनमचून.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.९.अनिरुद्ध ठाकुर- संसटिया बद्ध (लघुकथा)



अनिरुद्ध ठाकुर

संसटिया वद्ध (लघुकथा)

संसटियाक मूल नाम संसटिया नहि नहुँ।

पिता अनूपलाल सुरुज बाबूक हरवाह नहथिन आ सुरुज बाबूक ओकरा हगिनमानक नाम पर ओकर नाम राखल नहथिन कमल कुमार। किन्तु ई कमल कुमार दह-हाथ हाथेँगाहि ओहन रानी खब्बन निकलल जे बाप-बाप पर जकरा-जकरा सँ ढाढ़ी लबाक लल, लोग नहबाक लल सदैव उद्यत। ककरा सँ ओकर न पटनी बैसब नहि करए। राजक लठाँ-सगठा, राजक हाथापाँ, राजक गल्लम-गल्ला। कहियो माथ फाटबैन घूनए, कहियो ठेहुन फाटबैन त कहियो दाँत पाटबैन। ओकर अहि लडाकसरक चलते ओकर ओकतुनियासर ओकरा संसटिया कहए लागलए आ कालान्तर मे ओकर परिवार सेहो अहि नाम कँ स्वीकार कए ललक, मूल नाम हेराए गेलए आ कमल कुमार संसटियाक नाम सँ चिह्नल जाए लागल।

समय अ्एलए। संसटियाक वियाह रेलए। कनियां अ्एलए ग डाकन टालक जनानीसरेक मूंह यन एकटा कथा नरुए' जरुन संसटिया, गरुन व द्र! ह रेगवान! एरुन कन्हय स्त्री आ्ॐ गक नहि दखल। निधाग एकना खांवरा कनवी सं वनैन छथि जना।'

अ्हि कनियांक नैरुन म ज नाम नरुल द्रुअ्ए, सासुन म डा 'संसटिया वद्र 'क नाम सं प्रसिद्ध रेल। वियाह वादक किछु दिन, किछु रुम्रा, किछु मरि ना ग ठीक-ठाक चललए, गकन वाद नाजक डएठैनावला घाल-यवक्का शुरू रेल। काना एरुन दिन नहि जाॐ ज दूनू यनानी म संसट न हि राॐ। आ् स संसट एरुन-डारुन नहि, रेनरेन कनैग काना एक यऊ यरिन रल्लुक-सन गानि-वाग यन डागनए आ् गकन वाद नांठी-वटखौकी राॐग सांटा-सांटी गक यद्भुंच जाॐ। घनक लाकक कथे की, सौंस टाल म गर्दमगाल रे ए जाॐ। एकन काना समय सरा निर्धानिग नहि नरुए। कहिया रोन रा ॐगहि शुरू, कहिया दुयहनियाक जाग दखैग, कहिया सांम्रक दिया-वागी यरुन म, कहिया नागिक प्रथम यरुन, ग कहिया मध्य नाग्रीक स्म्रब्ध यह न कं चिनीवाथ कनैग। कालान्हन म संसटिया ग संसटिए नरुल, किन्नु संस टिया-वद्रुक संग अ्नकानक निशेषणसर झऊग चलि गेलए काढनी, अलवटा रु, नष्टिन आदि-आदि। वियारुक वानि-यांच वनस विगलाक वाद्य जखनि डाकना काना संगान नहि रेलए ग डाक ना संग एकटा निशेषण डौन झठि गेलए वांम्र।

एकदिन खाए पर कमठाउर करैत स्त्रीगणक गपक क्रम मे मरदावाली कह लकए 'अहि मौगीक छाती पर दूधक थैली छव नहि करए त एकरा बाल-बच्चा कतए सँ पिऔतए!'

मंसरिया आ मंसरिया-बहु दुनूक लेल जन-जमानाक एहन-एहन उखाहीसरे धनि-सन।

मंसरिया कँ जन-
मजूरीक काज हेरब मुश्किल रहए। जाहि जाइ, अपन संगी मजूरसभक संग कोनो ने कोनो मंसट कए लिअए, कोनो ने कोनो हिसाब ठाढ कए दिअए, कोन्हू पासिङ्हि सँ हीति जाइ। तँ एना होइ जे धपचर मे दु-तीन दिनक काज हेरल आ महिनाक छब्बीस-सत्ताइस दिन बिना कोनो काजक। मंसरिया बहु ओकरहु सँ सस्सन। खा
-
खनिहारक काज करबाक प्रति कोनो रुचि नहि। टोलक आन स्त्रीगण जँ कीं बानि कमाएब ओकर स्वभाव मे नहि। घर मे खराइ तक बनैनाइ ओकरा हानी बुझाबए। कोनो अतासनी-पतासनी सँ ने कोनो गपक संबंध ने कोनो काम-काजक, तँ अपन टुटली मडहियाक गुइयाँ पर परिया बिछाए कए ओंघराइल रहैत रहए। आधा सँ बेसी मास उपास जागि रहए, तँ खाइका बनैबाक मंसट कम होइ। एक दिन बनल आ बचल रहल त ओएह बसिया दु दिन-तीन दिन चलए, नहि बचए त जै गोवर्धन।

स मंसरिया-बहु एक दिन अचरजक काल कएलक। चारि-पांच बरस पिताक बाद जखनि ओकरा बाल-

बच्चा नहि हएत त ओ अड़ोसनी-
पड़ोसनी सँ बतिआबए लागल। ई बात की त संसरियाक सासुर बियाहक
 लेल लोकी खोजबाक निहोरा। अड़ोसनी- पड़ोसनी सुनए आ सुनि कए
मन-
मन हँसए। मुँह पर किछु कहबाक साहस त नहए नहि किन्तु परोछ म
ओकर निहोराक गप कए ठहक्काबाजी करए, ठिठोली करए। एहन संस
रिया आ ओकर बर मनिसा, तहि पर सौं नंवरक कारनी एकटा बच्चा, तक
ता क पचिआरा ओहन बटी हाए? किछु दिन तक संसरिया-
बच्चा अहि हेतास म रहल ज टोलक सभी अड़ोसनी-
पड़ोसनीसभ ओकर मदद करए किन्तु जहिए ओकरा अहि बातक ज्ञान
हए गेलए जे ओकरासभ सँ कोनो आस राखब व्यर्थ छौ।

आ एक दिन, जहि दिन आनहि दिन जकाँ सूरुजदेव उगल नहथि, आ
नहि दिन जकाँ ज्ञान आ दुपहर भेल रहए, तहि दिनक साँझ म संसरिया
-बच्चाक अड़ोस-पड़ोस, टोलक लोग ओहन आँखि चियानि-
चियानि, पियनी कँ बन-बन नगाउ-
नगाउ कए आश्चर्यचकित हेल संसरियाक टूटल मढ़हिया म एकटा नव
की कनियाँ कँ आवैत, प्रवेश करैत देखलक। नवकी कनियाँक अएबाक ख
बरि कान-
कान सौंस गाम म सभी बात पसरि गेलए। पूरुषलोकनि अपन-
अपन गोल बना दुनहि सँ प्राप्त अहि अचरजकारी घटना पर चर्चा
करथि, चर्चा म विस्मय व्यक्त करथि, विभिन्न तरहक अनुमान लगाबथि आ
 अहि अद्भुत पर टीका-टिप्पणी करैत श्लील-अश्लील हँसी-
मजाक करथि। जनानीसभक अलगे ताल, अलगे राग रहए। ओसभ

संसरिया घर पर मजमा लगाए देलक। डाकरासऐ कँ कोनो नाक-टाक त रहए नहि। आबए, मडहिया मे कूलि जाइ,कनियां कँ देखए आ अपन हाटेत कांढ कँ हाटए सं बचेबाक लेल दूनू हाथ सं अपन छाती प कएने, दखौंस लेल अपन मूंह बिचकाबैत अपन-अपन घरक डगर धए लिअए।

"हउ मालिक, अन्हेर छै! नवकी कनियां संसरिया-बहुक ममिऔत बहिन छिअए। बच्चा मे मलनिया-कालाजार भेल रहए, मनेन-मनेन बचल रहए। सूखए कए टटाएल छै सौंस देह मे हड्डिए-हड्डी। छै त कनियां एक-एक लोर मूला बिसनिया देह छै। ई भोगी गाए कोना धरतए आ धरतए त डाकरा सम्हारि कोना सकतए?" मनेराबाली कहलकए।

किन्तु दुनियां अचरज सं भरल छै आ संसरियाक टोल कि संसरिया सेहो एहि दुनियांक हिस्सा मे रहए। से अचरज भेलए। साल बीतैत-बीतैत संसरियाक नवकी कनियां, जे सौंस टोल मे 'मनलहिया'क नाम सं प्रसिद्धि पओने छल, तारन्धू धएलक, डाकरा सम्हारिउ लेलक आ एकरा पूरा रूप मे डाकरा धरा-धाम पर उतारिउ देलक।

ई अचरज एतय खतम नहि होइ छै, एतय सं शुरू होइ छै।

आ एकर बादवला अचरज एक दिन हमरा घर तक पहुंचल।

एक दिन बरामदा पर सं बैसल-

बैसल देखलिऐ जे एकटा सियार छागी बाली परम कुकुरा स्त्री हमर प
निसल म घुसल, हमरा देखि माथ परक साठीक छान कँ कानि निखा खिंच
लक, हमरा लग आबैग-

आबैग अपन गानल घाघ कँ कनी डोन गानलक आ कनी-

कनी हिचकिचाऽऽग, कनी-

कनी धखाऽऽग हमर बगल सं हाऽऽग उठिया दक हमर आंगन दिस पैसि
गेल।

बाद म गृहस्वामिनी बौलनि जे डा संसरिया-

बद्ध नहेए। काज खाजवाक लल आ एल नहेए। हमर घनक काजवाली ए
महन किछु दिन सं बद्धग अगनाएल-

मगनाएल जकां नहेए। काना दिन आबए, काना दिन नहि आबए। काना
दिन राग म आबए ग सांस म नागा कए दिऐ। गृहस्वामिनीक मन डाक
ना पर लाहळाएल नहनि। डाहि लाहळल मनहिक पनिशाम नहए जे ऽऽी
जानिाद्ध जे संसरिया-

बद्ध परम बलुनि छै, डा डाकना काज पर नाखब गछि लन नहथिन। अब
नजक संग संयाग सहा आबए छै।

एकन बादक किछु दिन गृहस्वामिनीक शिकायती-

निलाय सूनैग बीगल संसरिया-

बद्ध परम अकनब छै, बासनसर कँ नीक सं नहि मांजए छै, खनकटलहि
छाठि दए छै, बाढनि दए छै ग काग-कानटाक गनदा-

माटि डाहिना छूटल नहि जाऽऽ छै, पाछा दए छै ग हर्श पन मटिआएल

तितिनसरि यति जाइ छै, अनसाहांग लागैग नहि छै, एकना काज यन
 नाखव वतका रानी गुल रल, आदि-
आदि। वासनक ग नहि किन्तु अयन वहकका स्ती-कमक माउ-
याछाक संसरिया-
वद्धक कनगवसरि ग दखिगहि नही। दखी, दखिकउ मनहि-मन कनी-
मनी यिनयिनाइ आ इी साचि चूय नहि जाइ ज इी हमन निरगग नहि
थिक, अनन मगजयत्री किउ कनी।

किन्तु यननहिया वीगैग-
वीगैग गृहस्वामिनीक शिकायगी वाल क्रमशः घटैग गेलनि आ मास वीगैग-
वीगैग एकदम्म वंद रउ गेल। गकन वाद दूनक श्रीमुख सं यदा-
कदा संसरिया-
वद्ध लल प्रशंसाक वाल सहा आवउ लागल। अदूना एगक दिनक वैनाहि
क जीवन म अहि वागक अनुरव ग हम कैउ गेल छी ज जं काना वाग, का
ना वन्धु सं गृहस्वामिनी कं शिकायग नहि छनि ग एकन सारू-
सारू अर्थ अछि ज उा उहि वाग, उहि वन्धु सं संगुष्ट छथि।

गृहस्वामिनी गामक महिलालाकनिक लीतनाइन छथि आ गं हमना घन म
महिलालाकनिक अवनजाग लागलहि नहैग अछि। रिगनका माहाल म दू
नकासरक लल चायक यानि सदैव चढलहि नहैग अछि। जानकानी रिट
ल ज एहन प्रथक अनसन यन आव अयन नियग काजक अगिनिक्त संस
रिया-
वद्ध सट दउ चाय वनैवाक लल अगुआउ जाइग अछि आ गकना कय-
प्लट म नाखि सरि कं सादन यनासि सहा आवैग अछि। हमन घन अएनि

छनि महिलालोकनि घरक सारा-
सरञ्जाम देखथि, हुनक संज्ञान लैथि आ संसटिया-
बच्चाक बनाओल चाय पीबि आनंदित होथि। अहि सं संसटिया-
बच्चाक यश हुनक घर सं होइत बाहर-
बाहर पहुँचल आ हुनका कोनो दु-
गुन घरक काज होए लागल। ई बच्चाक निनाश नहि करैलक आ गीनु-
चारू घरक काज मन लगा कऽ करऽ लागल। काज त हुनका कोनो होइ
त नहऽ किन्तु एकरा लेल हुनका समय नहि बचैत रहऽ। एहि दिन अ
हि घर सं ओहि घर आ ओहि घर सं अहि घर, एक ठामक ठेकाना नहि
। हुनक गृहस्वामिनी चकित होइ करैथिन जे कोनाक यानि छै अहि मोगीक
देह म जे एतेक घरसँ म खटनीक बादहु संसटिया-बच्चा टन-
टन करैत रहैत अछि, थकनीक नाम नहि आ ई थकनी छै त हुनका देखा
न नहि दऽ रहल देत अछि।

समय अहिना बीतैत गेलऽ।

एक दिन देखलिअऽ जे संसटिया-बच्चा स्कूल-
ड्रेस म सुसज्जित एकटा गोल-गाल छौंडाक स्कूल-
बैग अपन कंधा पर लादने हुनक हाथ पकड़ि हुनक घरक सामनक स
ड़क सं चलि जाइत रहऽ। स्वाभाविक रूप सं जिज्ञासा भेल, कालिअऽ।
गृहस्वामिनी निर्मूसैत करैलनि 'सर चमत्कारक मूल म बएह छौंडा अछि'
। हुनका जनाएल गेल जे ई छौंडा संसटिया-बच्चाक सग-
बटा कहि़ओ कि बहिन-
बटा छिऐ। अपन समस्त कमाएल ई हुनकहि पर खर्च करैत अछि।

नीक-निकुत कपड़ा-
लत्ता, नीक आ पौष्टिक भोजन आ ओकरा एकदम साफ-
सुथरा राखब एकर प्राथमिक कर्तव्य भेल छै। चारि-पाँच घरक चौका-
बासन, झाड़ू-
पोछा करितहुँ ओ ओहि छौड़ाक सेवा काज नागा नहि होमए दैत छै।

'आ एकटा बात बुझलिऐ? ओ ओहि छौड़ाक नाम ओही स्कूल मे लिखबौने छै जहि मे अहांक पोता-
पोती पढ़ैत अछि।' कहैत गृहस्वामिनीक गप मे गर्वक भान रहनि।

दुनियां अपनहि सं चलल छै आ अहि अपनहिक चाल अंत नहि।

एक दिन मन मे अकस्मात एकटा प्रश्न जागल। गृहस्वामिनी कें हाक देलि यनि। ओ एलीह त पुछलियनि 'संझरियाक की हाल छै?'

गृहस्वामिनी तेना कए हमरा दिस ताकलनि जेना हम कोनो प्रचण्ड मूर्ख होइ। फेर कनी नम्र भेलनि आ ओलहनक स्वर मे कहलनि 'ओ लिखए-
पढ़ैक चक्कर मे अहां कें किछु बुझल रहए ए जे अहि दुनियां मे की-
की भए रहल छै?

हुन बजलीह 'बड़ा भेलाक बाद संझरिया किछु दिन तक घरहि मे गुम्म-
नाम बैसल रहल। न किछु बाजए, न बुकए। रहए-
रहए आ ओ कए एक बेर-दू बेर-बेर-
बेर बटाक मुंह देखि आबए। बहुत दिनक बाद एक दिन घर सं बहराए
ल आ सड़क पर दौड़ए लागल। तकर बाद ओ दौड़ब ओकर नित्य-

क्रिया भऽ गेलै। लोक जखनी ओकरा देखै, दौगहि देखै आ बूझ ऽ जे संसरिया बताह हुऽवाक डगर धऽ लेलक अछि।'

'ठीक बताह भऽ गेलै की?' हमर व्याकुल उत्सुकता हुनका टोकलकनि।

'सुनिऔ ने!' ओ बजलीह।

फेर हुनक स्वगत सं नियन्त्रण हुनक ठोर पर एकटा खूब मीठगर, खूब आह्लादकर मुस्की अएलनि, कहलनि 'पुलिसक भर्ती निकलल रहै। संसटिया ओहि मे जाऽ कऽ हिस्सा लेलक। दौड़क प्रतियोगिता मे ओ सौंस जिलाक प्रतियोगीसभ मे अव्वल रहल। परिणाम सलक्षन ओकरा भेलै। अखनि काना थाना नहि भेटलै ऽ। अखनि पुलिस-
लाइन मे ड्यूटी भेटल छै। बूझलिऐ, कालिदास जी!'

हमर अवनज सं बावल मुंह देखैत आ देखि कऽ आनन्ददायी-
बदमाशीक हंसी हंसैत हमर गृहस्वामिनी अंगना दिस चलि गेलीह।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.पद्य खण्ड

३.१.पवन मिश्र 'गोनौली'-मिथिलाक संस्कृति आ पर्यटनिक स्वरूप

३.२.राज किशोर मिश्र-मातृभूमि

३.३.आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

३.४.रामानन्द मण्डल- हम उदासवादी छी/ नदी/ जमिन

३.१.पवन मिश्र 'गोनौली'-मिथिलाक संस्कृति आ पर्यटनिक स्वरूप



पवन मिश्र 'गोनौली'

मिथिलाक संस्कृति आ परिवर्तनक स्वरूप

(पद्यमय)

१.

परिवर्तन सृष्टिक अछि आधार,
पल- पल घटित होइत रहैछ ।
सृष्टिक कोनो अवयव ओहिसँ नञ् बचलाक
परिवर्तनक बिना जीवन तथा
प्रकृतिक कल्पना नञ् भऽ सकैछ ॥

स्थान, अनुरूप, अनुभूति आ प्रयोजन
भेल करैछ समयक सापेक्ष ।
परिवर्तन किछु सार्थक किछु निरर्थक,
सार्थक परिवर्तन जीवनक प्राण होइछ ॥

नञि घृणा कऽ देखि तँ,
मानव जीवनक परिवर्तन, परिजन- पुरजन,
सभ्यताक आनंदहिसँ ।

खान- पीन, रहन- सहन आ मनोरंजन,
सामूहिकतासँ निजताक दिस क्रमशः प्रारम्भहिसँ||

सभ्यता आ संस्कृति सदति रहल
अन्योन्याश्रित अछि सम्बन्ध ।
एकर परिवर्तन दासनकें,
व्यावहारिक क्रियाकलाप,
सोच आ जीवाक बदलय ढंग ||

२.

सबसँ पहिने,
लोक आस्था ओ विश्वासक करब बात ।
वेद- पुराण, सनातन धर्म, तांत्रिक मत
आ लोकधर्मक विशेष प्रभाव ||

लोकधर्मक महत्व सबसँ अधिक,
लोकवेदक मान्यता प्रबल थिक ।
पहिने लोक तखन वेद,
एहि उपक्रम समय- समय पर भेल परिवर्तन,
आस्था आ विश्वासमे प्रभावित भेल जन-जन ||

वैदिककालमे छलाह जे देवतागण,

पछाति भेल बढ़ोतरी अक्रम आ परिवर्तन |
नव- नव देवी- देवता अबैत गेलाह,
अवतारवादक माध्यता पबैत गेलाह ||

तंत्र मे नव- नव प्रयोगक भेल चलनसारि,
सिद्ध संतालकनिक खास कऽ बढ़ल प्रचलन |
ओहि सहक भेल परिणाम,
मिथिला आस्थाक उग्र सत्ता नहि रहल वाम ||

वाममार्गी तंत्रक चलनसारि,
मिथिलामे रहल सीमित |
तहिना लौकिक धर्म उत्तम,
नित नव- नव लोकदेवता आ देवी भेलथि पूजित ||

ओखनहु ग्रामदेवता तीरहान,
यानी लोकदेवता कहबै छथि |
कुलदेवता या कुलदेवी,
सत्ता तांत्रिक देवी भेल कते छथि ||

समय- समय पर, खास देवी-देवताक
चला-चलती देखबामे अबैत- रहल |
ओहि श्रेणीमे, संतोषीमाता, वृहस्पतिदेव आ
मकुआगाछ पर्यन्त सम्मिलित होइत रहल ||

पहिने पंचदेवोपासक मिथिला
शैव, वैष्णव आ शाक्त विभक्त छल ।
वैष्णवमे मात्र छलाह सीतारामक पूजक,
पछाति, राधाकृष्णक उपासनाक हेतु
चैतन्य सम्प्रदाय अपनाओल गेल ।।

३.

मिथिलामे जैन धर्मक सेहो छल प्रभाव,
कतेक मुनि, साध्वी आ तीर्थंकरक छल प्रादुर्भाव ।
जखन बौद्धक छल चला-चली,
मिथिला सेहो नहि रहल अछूति ।।

आइयो मिथिलामे जैनक,
रहल नहि कोनो अस्तित्व ।
बौद्धक प्रभावकेँ नष्ट कयलनि,
मिथिलाक विद्वान आ दार्शनिक व्यक्तित्व ।।

ओहिठाम,
कबीर पंथकेँ माननिहार छथि पर्याप्त ।
हुनका लोकनिक आस्थामे मूढ़ा,
कबीरक संग आन देवी- देवता सेहो छथि व्याप्त ।।

४.

मख्र कालम रानाम जखन,
ॐस्लामक रल ष्ठल आगमन ।
रल मिथिला सह्य वस प्ररानिा,
मानिानास लाकक रल धर्म यनिवर्ान ||

ह्निका लाकनिक,
धर्म आ संस्कृतिम रल मौलिक यनिवर्ान ।
मूद्रा, यूर्वक संस्कृतिसँ सारु र' क'
नहि करि सकलाह,
अयना जीवनम कॐजकरा यूनना नक्ष्
नखनहि नहलाह ||

जना, स्त्रीगधक ह्नाना
नूआ, सनून आ चूडीक ववहान ।
आँगी ॐी लाकनि रनि रहक यह्निथि,
वूनकाक प्रयाग विनलाजक रखान ||

यूकख लाकनि, लुँगी आ यैजामाक संग
किछु लाक (धागिया अयनौलनि ।
यह्निनन- डाढनम रुनाक अवस्र

मुद्रा संस्कृतिसँ साफ नहि कटि पौलनि ||

मुसलमान शासक राज- काजमे,
फारसीक कएल प्रयोग ।
रोजी- रोटीक भाषा भेल फारसी,
मैथिलीकँ बिगड़ल संयोग ||

मुसलमान लोकनिक दरगाह,
हिन्दूक लेल सेहो भेल पूज्य ।
दरगाह दलान- दलान घूमय लागल,
चढ़ौआ चढ़ए लागल, कव्वाली होमय लागल,
मुसलमानक मजार हिन्दू लोकनिक तीर्थ बनल ||

मुसलमानक आगमनसँ,
पर्दा प्रथाक भेल आरम्भ ।
गोदना गोदवाक परम्परा सेहो आएल,
जे अंतिम साँस तक रहल,
आब, गोदनाक आधुनिक रूपक
चलन भेल प्रारम्भ ||

मिथिलामे पुत्रक जन्म पर,
छल पमरिया नाचक परम्परा ।
ओ सब मुसलमान छल,

ई प्रथा आइ भ' चुकल अधमरा ||

मिथिलाक खानपीन पर सेहो
पड़ल मुसलमानक प्रभाव |
सबहिक खीर आ पराठा,
प्रमुख, भोजनक बनल स्वभाव ||

मुर्गा खबाक चलनसानि,
आस्ते- आस्ते आम भ' गेल |
खस्सीक हलाली माउस अधिकांश हिन्दुक,
घर- घर सरआम भ' गेल ||

खानपीनमे अल्लू आ टमाटरक,
मध्यकालमे भेल चलन |
तमाकू सेहो ओहि समयक,
शुरू भेल हुक्का पीबक प्रचलन ||

मुसलमानक आगमनक एकटा पैघ प्रभाव,
पहिरना पर सेहो पड़ल |
सियाउल वस्त्रक उपयोग वर्जित छल,
मुदा, मुसलमानक देखाँउस-
सियाकऽ कुर्ता पहिरबाक प्रथा चलल ||

मिथिलाम ७खना कय७ा सीवाक उद्यमम,
मूसलमान छथि लागल ।
जा७ल का0क उपयाग सह्ल नर्जित छल,
धनि, गाहि सब नवाजकं लाकसब त्यागल ।।

ग.

औद्यागिक क्रांति, खाजी प्रवृत्तिक कारण,
अंग्रेजक प्रभाव विश्व सहित मिथिला यन य७ल ।
शासनाम अंग्रेजी नाजक स्कलस्नकय,
नलवक विकास आ यक्की स७क सह्ल वनल

अंग्रेजी लाक य८य लागल,अंग्रेजी व८य लागल,
विश्वक नव-नव स्थान मिथिलाम आवय लागल ।
लाकक यहिनन- उा८न शल अंग्रेजी
अंग्रेजी शब्द सह्ल मैथिली म आवय लागल ।।

अंग्रेजी ननवर्ष वनल ७क यानिनि,
कक काटि जन्मदिन मनाविनि ।
यश्चिमी नवाज आड्ड वनि गेल विधान,
मिथिलाम अंग्रेजियाकं वडु सम्मान ।।

ड.

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒕𑒪 𑒁𑓀𑒡𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮,
𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒁𑒫𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒕𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 ।
𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒥𑒰𑒞 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞 𑒦' 𑒑𑒹𑒪,
𑒖𑒹 𑒋𑒐𑒢𑒯𑒳 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒃𑒕 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒑𑒼𑒔𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒰𑒧 𑒪𑒹𑒪 ॥

𑒕𑒱𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒥, 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒠𑒥𑒰𑒧 𑒥𑒯𑒳𑒩𑒰𑒨𑒥,
𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏𑒰𑒪 𑒙𑒼𑒏𑒥𑒏𑓀 𑒧𑒰𑒢𑒥 𑒁𑒡𑒪𑒰𑒯 ।
𑒑𑒳𑒢𑒲- 𑒍𑒗𑒰, 𑒛𑒰𑒃𑒢- 𑒨𑒼𑒑𑒱𑒢 𑒂 𑒦𑒑𑒞𑒰𑒏,
𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩- 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒗𑒰𑒛𑓃- 𑒤𑒴𑒏𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪 𑒐𑒑𑒞𑒰 ॥

𑒯𑒻𑒖𑒰, 𑒏𑒰𑒠𑒥𑒰 𑒂 𑒔𑒹𑒔𑒏𑒏𑓀,
𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪 𑒠𑒹𑒫𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒼𑒣 ।
𑒡𑒱𑒨𑒰𑒣𑒳𑒞𑒰𑒏𑓀 𑒨𑒰𑒠 𑒠𑒱𑒁𑒨𑒥𑒰𑒏,
𑒩𑒱𑒫𑒰𑒖 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒪 𑒥𑒛𑓃 𑒁𑒢𑒧𑒼𑒪 ॥

𑒄 𑒮𑒥 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒯𑒠 𑒡𑒩𑒱,
𑒂𑒃 𑒑𑒹𑒪 𑒥𑒠𑒪𑒱 ।
𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰,
𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒫𑒱𑒡𑒫𑒰𑒏 𑒕𑒪 𑒁𑒞𑒱 𑒠𑒨𑒢𑒲𑒨,
𑒫𑒱𑒡𑒫𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪 𑒁𑒡𑒪𑒰𑒯
𑒂𑒃 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒳𑒡𑒩𑒱 ॥

वाल विवाह आ अनमेल विवाहक,
वदलि गेल अछि पूनना कुनीति |
वहुपत्नीक नवाज सह्य उ0ल,
वदलल कारन - दहेज आ छुआछूतक नीति ||

वदलि गेल समाजक लोकव्यवहान,
सामाजिकताक रावना हल कमजान |
नहि नहल श्रेष्ठ आ समाजक काना लहाज,
ज0कँ यतन छवि ननतुनिया नहि लागs चाहय गोउ ||

अतिथिक सम्मान आ समक्ष समाजक संग,
वृद्ध- वृद्धानुसक माजन पूर्णतः घटिगेल |
अपनेपी घटल आ वढल स्वार्थ अहंकान
लोक- लोकम आव डा सलुकता नै नहि गेल ||

१.

आधुनिकता आ सुखक उजाहिम,
हल पलायन गाम- गामसँ |
जाति - जातिम छल ज पानस्पनिक सनाकान,
स सामाजिकताक वस ह्रास हल धनामसँ ||

औद्योगीकनन डा मशीनीकननक पुगम,

बढ़ल बास सुविधा आ आराम भेटल ।
जिनगी जिनाइ सहज भऽ गेल,
तँ बढ़ल चलनसारक विघटन घटल ||

कम लोक आ कम समयमे,
काज अधिक होमए लागल ।
ताहि कारणे बढ़ल बास साविकक
आचार- विचार बदलए लागल ||

बड़दक दाउनी, कनीन पटौनी,
विला गेल बटगमनी आ लगनी गीत ।
चूड़ा कुटब, धान कुटब आ कान्हआड़क संग,
पचनियाँ आ गोदनाक गीत ||

सब क्रियाक संग,
जुड़ल अछि संस्कृतिक घनिष्ठता ।
महफा- खनखनिया आ बैलगाड़ीमे ओहार,
हाथी छल द्विरागमन आ विदागरी,
डोली छल मिथिलाक व्यवहारिक संस्कार ||

ननकनियाँक विदागरीक दिन मनायब,
आब भऽ गेल खिस्सा ।
दिन रुनब, लिआउन कनायब, बटीकँ

छठा मास बीतल जाएब,
आब सिर्फ अभिलाषा ||

माल- जाल नष्ट भऽ गेल,
माल संवर्धित मानित स्थान खतम भऽ गेल |
ओकर उपयोगक वस्तु,
आब सभ धरोहर रहि गेल ||

६.

लोक आ पारम्परिक गीतम,
बहुत समृद्ध रहल मिथिला |
कला सांस्कृतिक समाजक लेल,
कठिन रहल साकाविला ||

बच्चा सा जेठक तनक,
लोकनाग आ शासक कने छथि चर्चा |
आन्ह- आन्ह बहुत नास अलापित भs गेल,
शेष बाँचल नाग - शासक अछि अन्तिम अवस्था ||

किछु तs साह खतम भऽ गेल,
लगनी, बटगमनी आ पचनियाँक गीत |
निर्गुण आदि आब भेल दुर्लभ,

ञलायिग र७ (गल (गादनाक गीग ||

गहिना यमान, थ्रलनि ञा गिनक्र्ग ञादि,
खिस्रा ग' ७हि0ामक कहल नहि जा७ |
क धियायूगाकँ मलान गावि सूगवैथ,
मिथिलानीक कं0सँ ञाव सूनल नहि जा७!!

९.

रनि सालक निरिन्न यावनि- गिहानक,
ञायूर्दा सहा ञछि लगिविञा७ल |
लाकगाथाक गायन मंवनक यनम्पना टूटल,
निरिन्न लाकनाट्य ग्रसिग कालक गाल ||

यहिन टय, टीवी, रिसीञान ञा निविया सिलमा,
ञाव ञानकस्न्न ञा ॢँटननट यन
यनसाॢग सामग्रीक चलनसान |
गाम- गाम ७क लखा,
सम्यूर्ण मिथिलाक ॢ७ह ववहान ||

१0.

लाकक खानयीन ञा यहिनन- डा७न सहा वदलल,

भात, दालि,तरकारी, चटनी आओर पापड़ अचार |
तरुआ,दही, दूध, घी, साग, बड़- बड़ी आदि,
ई मिथिलाक मुख्य भोजनक सचार ||

विशिष्ट कार्य- फूलकी, पूड़ी, सोहारी, मालपूआ,
खीर, पाकुआ-पू, सकरौरी,मखानक खीर ओ खाजा |
मड़ुआ, मकई, चाउर आदिक रोटी,
अल्हुआ, कादा, भातक संग प्रिय माछक पाठी ||

बलिप्रदान बला माउस लोक सब खाइत छल,
पनवा,पौनकी,सिल्ही, बगेरी,साही आदिक माउस
सेहो साइत संजोग खाएल जाइत छल |
नोनिक चाँवल भातम होइत छल बसिया जलखै,
चूड़ा- दही, फूटहा, मूरही आदि सेहो प्रिय छलै ||

आब गहूमक रोटी,
मुख्य भोजनम सामिल भऽ गेल |
बासि- बनहटक सामग्रीम
सेहो बदलाउ आबि गेल ||

मूर्गा, अण्डा आब खुलि कऽ खाइत छथि,
तहि संग, देशक विभिन्न प्रांतक भोज्य वस्तु
खवाक प्रचलन शुरू अछि |

ञ्ञतली, जसा, सांरन आ उगयम,
रलुआ, यनाOा, यायउ, सवञ्ञ, नूतम्म, चाउमिन
यालाउ आदिक वस रञ्ञ्ञ्ञठ संगम ||

मधून खवाक नवाज अछि अनामति,
नहि मिOाञ्ञ ग' चीनियां चारव कनी |
मीOक लार गजल नहि जाउ,
अंगा॰ गुजसं काज चलव कनी ||

११.

मिथिलाम यहिनन- उा८न
सदा खुव वदलल |
मूसलमानक ञलाक वाद,
सियाउाल नस्म यहिनवाक नवाज वनल ||

यूकख कुर्ता, मिनजञ्ञ, (गालगंजी यहिनय लगलाह,
यछाति यैजामा, लुंगीसँ सदा यनरज नहि नखलाह |
अं(ग्रजक वूस्मट,यह, काट- सूट, टाञ्ञ चलल,
सैंज,टीशर्ट आन अनक गनरक यनिधान वनल ||

याग,यगउी आ चादन- दायटा,
ञ्ञी आव अनसन निशेषक मात्र शारटा |

स्त्रीगण आँगी, कुर्ती आ समीज-सलवार,
घघरी, लहँगा, पन्ट- शर्ट सेहो पहिरैथि सनमान ||

ओना स्त्रीगणक मुख्य पहिरना,
ओखनहु धनि अछि नुआ |
हालाँकि सूनटा आँचर कम,
आ ओनटा आँचरक प्रचलन बढल हुअा ||

आब युवकका गहना सेहो उठि गेल,
मंगलसूत्र, झुमका, हारक चलनसारि रहि गेल |
बुलकी,बाजूबन्द, सूर्ति,पाजेब आ कडा,
उठल माकडी, ठेकस, पहुँची, माहनमाला ||

बाली, नथुनी, पायल, हार, छक,
बिछिया, अँठी ओखनहु चल |
सिथीक बियास नव- नव रल,
युवकक कनौसी, कुंडल, मद्रा, हलुमानी
आ काँठा सेहो अलापित रहि गेल ||

युवक लाकनि बावनी सीटे छथि
मिथिलाक प्रसिद्ध प्रियुंत छाति दल |
टीक, टीका कम्म लाक नाखथि,
नव- नव स्टैसनक बियास आबि गेल ||

१२.

नव-लोकनिमे फैशनक मात्र तेहन बसक्कार
छुतकामे केस कटेबासँ छिटकय चाहथि।
छुतकामे तेल, साबुन, आ शृंगार वर्जित छल,
केसक मोहमे नवतुरिया कठियारिया नहि जाए चाहथि ||

श्राद्धकर्म सोलह संस्कारमे,
अंतिम संस्कार थिक।
शास्त्रीय विधिसँ बेसी,
प्रदर्शनक बढ़ल व्यवहार थिक ||

भोज- भातमे खूब खर्च कएल जाइछ,
एकरा सामाजिक सम्मानसँ जोड़ल जाइछ।
छठिहार, विवाह आ श्राद्धकर्म आडम्बर भऽ गेल,
मृत्युभोजक विरोध सेहो कहू-कहू शुरू भऽ गेल ||

देखावा आनो संस्कार सभमे बढ़ि रहल,
पारम्परिक विधिसँ बेसी प्रदर्शनक महत्व बढ़ल।
वैवाहिक वर्षगाँठ आब लोकप्रिय भऽ रहल,
एहिमे एखन खूब खर्च- वर्च कएल जा रहल ||

ओ लोकनि नहि छलाह अकछल,
अपन प्रचलित विध- व्यवहारसँ |
सभह लोकनि करै छथि देखाँउस,
आन संस्कृतिक आत्मन अपना कऽ ||

सूट, पैन्टमे पहिरि,
समय लागल बिवाह |
जयमालक पनयना सहा आनन्द रहल,
आजन- बाजनक चलनसँ
नहिछ रहल सब परवाह ||

कमी रहल विश्वास ओ आस्थाक,
देव-पितर, पावनि- तिहारमे |
घटि गेल पावनिक संख्या,
सात्विकक निष्ठा नहि गेल व्यवहारमे ||

गाममे लोकक कमीक कारणे,
गोसाउनि- कुलदेवताक पूजा नहि रहि गेल |
डीहवार किंवा ब्रह्म बाबाक पूजाक प्रति
आब नहि पहिने सन उत्साह गेल ||

१३.

रान- चँ(गना साँ0- उसानक,
सारु खराम र७ (गल नवाज |
टाल- यतास आ ह्लि- अयज्ञिाकं
वजन य(0नाऽ्ऽ वन्न र७ (गल सकल समाज ||

यह्लि दसगर्दा या सामाजिक काज कनवाम,
वूसे छल लाक अयन प्रगिष्ठा |
यनिश्रमसँ ल' धन गक कने छल अर्यिग,
दान द७ समाजक प्रगि नखे छल निष्ठा ||

गुमिह्लीनकं दऽ कऽ घना3ी,
सम्मान सह्लिग जाऽ्ऽ छल वसाउाल |
मृदा आव सव अयनह्लिम मस्,
कौउा- कुकुनकं ७क मृ8ी अन्नक नहि (0न ||

का0ी, ढक, वखानीक वदला,
धागुक ञ्रामक र७ नहुल उययाग |
माटि,वाँस, का0, सिक्की आदिक
काह्ला, खायउ, घैल, अथना, यथियाक
नहि नहुल दैनिक प्रयाग ||

चँ(गनी, मौनी, क(0ोग, ढाकन,
दावि, सनवा आदि (गल विलाय |

सज, गोनरि, पटिया, सिकलपाटी नियच्छा
धातु आ प्लास्टिकक वस्तुक रूप उपाय ||

१४.

पहिने अछि घर- आंगनमे रखनहु अनियन
मूदा, कावन कागत पर बना सारल जाइत अछि |
लिखिया लिखबाक परम्परा छल दिवाल पर,
सहो विनलैक कागद देखबामे अबैत अछि ||

मिथिला चित्रकलाक रूपमे,
कयल पर उगानि जरूर रूप नहल व्यवसाय |
मिथिला पेंटिंग पारम्परिक विषयक संगहि
नित्य नव बनि रहल चित्रकलाक विषय ||

मिथिला आ बाहर सहो,
बहुत नाम शैलीय रंगमे चित्रकारी रूप रहल |
मिथिलाक गौरवमयी मंजूषा चित्रकला,
प्राचीनक वगनामे अधमना अछि पउल ||

आब नहि देखल जाइत अछि,
मिथिलाक पारम्परिक लुप्त- रास |
कागS गेल सुजनी, कुम्हरसक सजावटी वस्तु,

झटन- गुलबन्द, मारा- मयना,
डाली, चंगेरी, पूथनी जकर मूल छल-
नारी, खढ़ आ खजूरक पात ||

मिथिलाक वास्तुकलाक छल अपन विशिष्टता,
फूस, टीन, पक्का घर किंवा मकान |
उपाय नीकसँ अपनाओल जा सकैछ,
कोठाघर आ मंदिरक निर्माण ||

आकार- प्रकारकेँ ठीकसँ बचायब,
आब गँ नहि बचल फूस आ टीनक घर |
नहि बचल ओ निर्माण शैली,
मिथिलाम वास्तुकलाक विशिष्टता जे छल ||

१७.

बहुत रास खेलधूप, जे
जोड़ैत छल संस्कृति आ व्यक्तित्वक विकाससँ |
अटकन-मटकन, चानानुक्की, कमालबानी,
कबड्डी, टालगुल्ली आ पचीसीक आगसँ ||

छल मानित प्रचलित,
फकरा ओ शिशु गीत |

मूदा यदिन क्रिकट, यञ्चागि
मावाञ्लील सवकँ कलक चीग ||

सूखनागी दिन दूनादूनी,
आ ह्र७गीगलम शिकान |
ञ्ली संस्कृति उविगा समाप्त एल,
मूदा, कमि गेल एगुआक उा नवाज ||

गहिना कमि गेल जट- जटीन आ सामा- चकवा,
आन मिमिया खलनहान |
वालीक मधूनाम सहा ह्रास एल,
आव नहि रुकना- खिस्सा कहनिहान ||

१६.

मिथिलाक संस्कृतिम कैल गेल अछि,
अनेक सम्बन्ध आ अवसनक व्यवस्था |
ननदि- भाउजि,सनहाजि-ननदासि,
सान आ सानि- वहनाञ्लीम हँसी-ठठा,
यूकख सासूनम सहजहिं आनन्दित नहगा ||

छठियान, मूड़न, विवाह, चतुर्थी,
द्विनागमन, एनहा७ी आ वनियागिक स्वागत |

वनियाणिक स्जन आ समधिक सौजनक
अनसन यन अलायित हास-यनिहासक आदत ||

ओहि सव अनसन यन हँसी- मजाकक लल,
तरुकन आ अन्य गीतक छल नवाज ।
मुदा समयक चाट ओतहु यउल,
यहिन जकाँ चौलक नहि नहल ववहान ||

११.

मिथिलाम कनवाक छल संस्कृति,
वटीक द्विनागमनक दिन मनाउल जवासँ ।
द्विनागमन काल माओ-वटी उा यनिजनक कानव सुनि,
धेर्य किया नहि नाखि सकथि वटीक घानासँ ||

किन्तु, कनवाक स्त्री यनम्यना,
ऊीध्र रओ गेल आधुनिकताक प्रभाव ।
मला- ठेलाम माओ- यिणियाङ्न रॅटि गेन,
वन्न रल धंटा- जाउ कओ कनवाक स्वभाव ||

वहुत नास मला लगेछ ओखना मिथिलाम,
ओक दिनक मलासँ मास दिनक मला धनि ।
कमला मला, मला दवघनक, सिमनिया घाटक,

ब७द- मर्हींसक मला साँयक मला सिंघियाघाटक ||

१६.

ई विषय मात्र लेख या पत्रक नहि,
संस्कृति परिचय छैक मनुक्खक |
एकर विशालकाय सनकय छैक,
समृद्ध संस्कृति प्राचीन मिथिला गुरागक ||

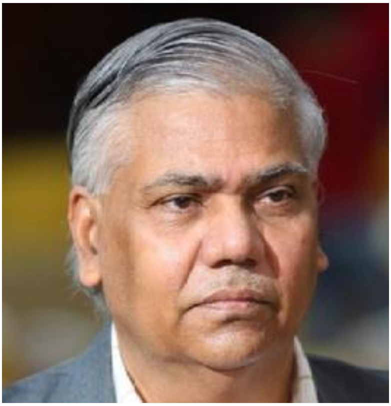
वर्तमान मिथिलाक संस्कृति,
बढ़ल गेल अछि बदलि |
एहि बदलल स्वरूपम,
अंधविश्वास, देखाँउस, ब७यनक लागि
आ अज्ञान अछि कारण बनल ||

कमी नहल गौनव बाधक,
प्रदर्शनक प्रवृत्ति बढ़ल |
परिवर्तन स्वरूपनिक छल
मुद्रा, संस्कृतिक मूल तत्व अपमानित
आन जाति उखाड़ि नहल ||

- हाटगछिया, थाना, कोलकाता- 700105, 9433746295; सहायक शिक्षक, श्री उमापति विद्यामंदिर, पश्चिम बंगाल सरकार, कोलकाता।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.२.राज किशोर मिश्र-मातृभूमि



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (ह्री), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अरेर डीह, पो. अरेर हाट, मधुबनी

मातृभूमि

ज गु-रा ग कृदय म वसल,
अछि मा न म ज सदि खन सजल,
जन्मगुमि रा ना रूमन,
सर सँ नमरून ॐउरू रा थ रटला

वसुधा यन उँ अछि स्वर्ग कान्द्र,
ङा दश रा नानर्ष अछि ,
का न वेरून अछि जगत् म,
उाउ नहि जकान उत्कर्ष अछि ?

उहि दशक धनी यन जनल ठल,
सयता क यहि ल वा री ,
उहि Oा मक युक्षा संस्कृति ,
आदनक्षी या , जगत् म, रा नी ।

ज सकुन अछि उहि मा टि म,
या ङाल न जा ॐग अछि ,आन Oा म,

गँ गs कउ नरूलद्गँ, वन-वन,
अछि , मा गृगुमि क रूम प्रक्षा मा

ऊँच -ऊँच ,हि मनग सर Oा ७,
उज्वल सनि गा क उड्डम यहा ७ा

मी ल, ग७ा ग, सूह्न का नन,
गमकि नरुल वन म चा नन।

मकगुमि सरुा अछि ननूआगन,
गी न दि स सँ ङगनन ,अछि सा गन।

शां गि -सुकुन क प्रनी क रा ना,
रवि थ्य -जा गि , ॐ७रु मा टि , वा ना।

स्ना न ङा नि स्ना न, सरु म आगु,गु
७रि मरुा न ना ष्न कँ, (गा न ला गु।

जग जनैठ ,रि नक यौ कषगा -न्ना ल,
शगू क लल, रा ना अछि का ल।

शां गि क सरु सँ यैघ यङधन,
नि श्न कनैग अछि गँ गs आदन।

गु यन नरि अछि ७रि सँ सूह्न दश,
ज, नि श्नक रुटवैग अछि ,न्ननुन्न -कूरुस।

ज रुना अवैठ ,आन दश सँ,

गलि जा ॐ्ग अछि डाकन नि षा द,
वनि उदा न ,वरेग अछि डा यूनि ,
छलैक जा रिः म रनल रुसा द।

धन -धा थ्य सँ रनल -यूनल,
रा ना सँ, मंगल -या न उ७ल।

सा मंजस, समता , सरुजी वि ता ,
मूलमंत्र अछि ,सरि षूता ।

ता कि आउ सगन धनी यन,
उी नन म न काद्र, ॐी सूह्नता ,
सर्वा रुद्र रा न सँ रनल,
रा नाक रुका न ,क नरि यूनता ?

नन -यूना न, नि स्रा न -स्रा न,
प्रगति ,शां ति लल ,नि ष्ठा ,रकि ,
जय रा रा नानर्ष रुमन!
नसूधा यन अछि ॐी मरा शकि ।

लि ष्ठा नरि अछि स्र्ग क,
आ', न वा दी अपवर्ग,

एक जनम एा जा मा भूमि ,
ॐ, धूनि -धूनि आवी सगे।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.३.आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल



𑒂𑒬𑒲𑒭 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩- 𑓒 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪

1

𑒮𑒖𑒪 𑒢𑒨𑒢 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒹𑒬 𑒯𑒰 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏
𑒏𑒧𑒪 𑒢𑒨𑒢 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬 𑒯𑒰 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏

𑒠𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒩𑒹𑒖 𑒕𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒛𑓂𑒛𑒲 𑒮𑒩𑒹 𑒯𑒧𑒩
𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒔𑒪 𑒏𑒳𑒢 𑒠𑒹𑒬 𑒯𑒰 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏

𑒠𑒬𑒰 𑒠𑒱𑒬𑒰 𑒏 𑒑𑒨 𑒏𑒢𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒿
𑒮𑒅𑒪 𑒑𑒪𑒪 𑒨𑒢𑒱𑒫𑒹𑒬 𑒯𑒰 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏

𑒏𑒢𑒲 𑒧𑒢𑒲 𑒕𑒢𑒱 𑒂𑒔𑒢𑒏𑓂𑒭 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒢
𑒥𑒛𑒰 𑒥𑒛𑒰 𑒅𑒣𑒠𑒹𑒬 𑒯𑒰 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏

नव नव अरुसन नव राषख।
सूनल सूनल संदेश भा मालिक

सभ पाँतिमे मात्राक्रम 12-1222-1222 अछि।

2

कूलकूल कूलकै अगव उथान
ग[illegible]म विकलै आँगन भमान

(धानी कूनता वउका टिक्का
चमचम चमकै नाँगल सियान

मूठ क छै सरभँक जीवन
मूठ क छै खाँभिस भजान

भव कनौ [illegible]ी महामिलन
कूमानि [illegible]ब्बा हाटा कूमान

किछु आदति गभन नहै ज
भमहूँ लथान उाहा लथान

𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒧𑒹 22-22-22-22 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒥𑒯𑒩 𑒧𑒲𑒩 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓓.𑓔.𑒢𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪- 𑒯𑒧 𑒅𑒠𑓂𑒨𑒰𑒢𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒢/ 𑒢𑒠𑒲/ 𑒖𑒧𑒱𑒢



आचार्य रामानंद मंडल- हम उदारवादी न/ नदी/ जमिन

१.हम उदारवादी न

हम छी उदारवादी न।

हमरा द सम्मान न।

तारा दवौ मान न।

हमरा कह यौ न।

तारा कहवौ नौ न।

हम रखेछी मूंछ न।

तुहा मूंछ राख न।

हमन मुंठ उ0ल न ।

गारुन मुंठ खसल न ।

हम (धागी यदिन न।

गुहा (धागी यदिन न।

हम यदिनन लाल न।

गु यियन यदिन न।

हम चनन कौली न।

गुहा चनन कन न।

हमन चनन लाल न।

गारुन चनन उज्ञान न।

हम शिखा नखली न।

गुहा शिखा नाखि न।

हमन शिखा माट न।

गारुन शिखा यागन न।

हम नखली सिनग्रान न।

गुहा नाखि सिनग्रान ना।

हम पह्नन पाग ना।

गु वंधिउ मूनठा ना।

हम गाहन पूनहिग ना।

गु हमन यजमान ना।

हम गाना कहवौ ना।

वाह गुही कनिह ना।

नामा हम उदानवादी ना।

२.नदी

नदी हजानन वहैग,

छल छल वहैग।

पानी जका दुध वहैग।

धनी क पर्नग जका,

हजानन स्मन सा।

पानी जका दूध पिबैत।

हजारन पादप-अपादप ।

हजारन जीव-जंतु,

पुत्र पुत्री जका,

माय धरती क।

परिपूर्ण करैत।

धन्य धान्य सँ।

शस्य श्यामला बनबैत।

नदी नीर सँ,

माय धरती क।

पानी जका दूध बहैत।

दूधमती बहैत।

बागमती, अधवारा, लखनदेई,

कोशी, कमला, जमुना,

माय धरती के।

हजारन नदी बहैत।

गंगा, जमुना सन।

नीर सन दुख बहैत।

हजारन स्मन सं,

रामा धरती के।

३.जमिन

गहन के सिधा।

(गट यन स आवाज आयल।

के छी।

हम जमिन।

खूब सुन्नर कारी यूरती।

उमर ॐॐह पच्चीस।

कान नाक सान स अलंकृत।

यैन मं चानी क यायल।

क दलक दिल क घायल।

ताकन सून्नता न।

ओं हम कहली।

काह मंगैत छी भीख।

उ कहलक हम छी ताम।

गहन क सिधा हमन अधिकान।

हम कहली।

कैला बनैय छी नीच।

उ कहलक।

भगवान बनैल हय नीच।

हम सोच लगली।

शास्त्र बनैल हय नीच।

हम कहली।

विहान मं बनलय हय।

ओगो दनागा आमा।

आवि न मांगू सिधा रीख।

न लौटायव खाली हाथ।

हम द दली सिधा रीख।

हमना ह्वाना स जाक।

नामा मांगे लागल।

आमिन सिधा रीख।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

